09 सूरए तौबा

आयत 1-5 (सूरए तौबा, 9:1-5)

आयत 1 (सूरए तौबा, 9:1)

अनुवाद: "ऐ मुसलमानों! जिन मुशरिकों से तुम लोगों ने सुलह का एहद किया था अब ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ से उनसे (एक दम) बेज़ारी है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:

- इस आयत में "मुशरिकों" से सुलह के बाद बेज़ारी की बात की गई है। इस प्रकार का संदेश धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से विवादास्पद हो सकता है, क्योंकि यह "प्रमेय" (ज्ञान का वस्तु) को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट नहीं करता कि बेज़ारी क्यों और किस आधार पर की जा रही है।
- Nyaya दर्शन में, किसी भी निष्कर्ष का आधार प्रमाणित और व्यावहारिक होना चाहिए, लेकिन यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है। इसमें बेज़ारी की घोषणा का तात्त्विक आधार स्पष्ट नहीं है।

निष्कर्ष: यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह बिना किसी ठोस प्रमाण या तात्त्विक आधार के बेज़ारी की बात करती है। यह आयत सार्वभौमिक रूप से समझने योग्य नहीं है, क्योंकि इसमें ज्ञान का स्पष्ट आधार नहीं दिया गया है।

आयत 2 (सूरए तौबा, 9:2)

अनुवाद: "तो (ऐ मुशरिकों) बस तुम चार महीने (ज़ीकादा, जिल हिज्जा, मुहर्रम रजब) तो (चैन से बेख़तर) रूए ज़मीन में सैरो सियाहत (घूम फिर) कर लो और ये समझते रहे कि तुम (किसी तरह) ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते और ये भी कि ख़ुदा काफ़िरों को ज़रूर रूसवा करके रहेगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषण:

- **आयत में यह कहा गया है कि मुशरिकों को चार महीने भ्रमण करने का समय दिया गया है, लेकिन इसके बाद उनका दंड निश्चित किया गया है। इस प्रकार की समय-सीमा और उसका कारण "Hetu" (कारण) से मेल नहीं खाता।**
- **Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी निर्णय का एक सुस्पष्ट कारण होना चाहिए, लेकिन यह आयत केवल एक निश्चित समय अवधि और उसके बाद के दंड का आदेश देती है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट कारण या तर्क नहीं दिया गया है। इसमें केवल एक समय सीमा का उल्लेख किया गया है, जिसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 3 (सूरए तौबा, 9:3)

अनुवाद: "और ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ से हज अकबर के दिन (तुम) लोगों को मुनादी की जाती है कि ख़ुदा और उसका रसूल मुशरिकों से बेज़ार (और अलग) है तो (मुशरिकों) अगर तुम लोगों ने (अब भी) तौबा की तो तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है और अगर तुम लोगों ने (इससे भी) मुह मोड़ा तो समझ लो कि तुम लोग ख़ुदा को हरगिज़ आजिज़ नहीं कर सकते और जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तेयार किया उनको दर्दनाक अज़ाब की ख़ुश ख़बरी दे दो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Knowledge)**
विश्लेषण:

- **इस आयत में, यह कहा गया है कि यदि मुशरिक तौबा करते हैं तो उनका भला होगा, अन्यथा उन्हें दंड मिलेगा। Nyaya दर्शन के "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, ऐसे आदेशों का आधार प्रमाणित और सत्य होना चाहिए।**
- **यह आयत केवल विश्वास और धार्मिक आदेशों पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है।**

निष्कर्ष: यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी प्रमाणित और सत्य ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है। यह केवल विश्वास और धार्मिक आदेशों पर निर्भर है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक है।

आयत 4 (सूरए तौबा, 9:4)

अनुवाद: "मगर (हाँ) जिन मुशरिकों से तुमने एहदो पैमान किया था फिर उन लोगों ने भी कभी कुछ तुमसे (वफ़ा एहद में) कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की हो तो उनके एहद व पैमान को जितनी मुद्दत के वास्ते मुक़र्रर किया है पूरा कर दो ख़ुदा परहेज़गारों को यक़ीनन दोस्त रखता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**
विश्लेषण:

- **आयत में कहा गया है कि जिन मुशरिकों से सुलह की शर्तों का उल्लंघन नहीं हुआ है, उन्हें पूरा किया जाए। यह निष्कर्ष "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) से मेल नहीं खाता, क्योंकि यह केवल एक व्यावहारिक आदेश है, जिसका कोई निश्चित और अनिवार्य परिणाम नहीं है।**
- **Nyaya दर्शन में, किसी भी आदेश का एक निश्चित और अनिवार्य परिणाम होना चाहिए, जो यहाँ स्पष्ट नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी भी घटना के परिणाम के लिए कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं है।

आयत 5 (सूरए तौबा, 9:5)

अनुवाद: "फिर जब हुरमत के चार महीने गुज़र जाएँ तो मुशरिको को जहाँ पाओ (बे ताम्मुल) कत्ल करो और उनको गिरफ्तार कर लो और उनको क़ैद करो और हर घात की जगह में उनकी ताक में बैठो फिर अगर वह लोग (अब भी शिर्क से) बाज़ आए और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात दे तो उनकी राह छोड़ दो (उनसे ताअरूज़ न करो) बेशक ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**
विश्लेषण:

- **आयत में यह आदेश दिया गया है कि मुशरिकों को कत्ल किया जाए यदि वे शिर्क (पारंपरिक धार्मिक विश्वास) से बाज़ नहीं आते। यह आदेश "Hetu" (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाता, क्योंकि इसमें कोई ठोस और तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।**
- **Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी दंड या निषेध का स्पष्ट कारण होना चाहिए, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दंड और निषेध का कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

सारांश:

इन आयतों में बेज़ारी, समयसीमा, और दंड के आदेश दिए गए हैं, जो केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और Nyaya दर्शन के तर्कसंगत तत्वों से मेल नहीं खाते। इनमें दंड और निषेध के लिए कोई ठोस प्रमाण या कारण नहीं दिया गया है, जिससे यह आयतें प्रमाणित और तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक बन जाती हैं।

आयत 6-10 (सूरए तौबा, 9:6-10)

आयत 6 (सूरए तौबा, 9:6)

अनुवादः "और (ऐ रसूल) अगर मुशरिकीन में से कोई तुमसे पनाह मागें तो उसको पनाह दो यहाँ तक कि वह ख़ुदा का कलाम सुन ले फिर उसे उसकी अमन की जगह वापस पहुँचा दो ये इस वजह से कि ये लोग नादान हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**
विश्लेषण:

- **आयत में यह आदेश दिया गया है कि यदि मुशरिकी पनाह मांगें, तो उन्हें पनाह दी जाए और फिर उन्हें उनकी जगह वापस भेजा जाए। इसमें यह कहा गया है कि ये लोग नादान हैं।**
- **Nyaya दर्शन में, किसी आदेश या निष्कर्ष का एक निश्चित और अनिवार्य परिणाम होना चाहिए, जिसे "Vyapti" कहा जाता है। हालांकि, इस आयत में पनाह देने का परिणाम स्पष्ट नहीं है और यह केवल एक सामान्य आदेश के रूप में दिया गया है, बिना यह स्पष्ट किए कि इसका कोई निश्चित और अनिवार्य परिणाम है या नहीं।**

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी निश्चित और अनिवार्य परिणाम का उल्लेख नहीं किया गया है। यह केवल एक आदेश है, जिसका कोई निश्चित परिणाम नहीं बताया गया।

आयत 7 (सूरए तौबा, 9:7)

अनुवादः "जब मुशरिकीन ने ख़ुद एहद शिकनी (तोड़ा) की तो उनका कोई एहदो पैमान ख़ुदा के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक क्योंकर (क़ायम) रह सकता है मगर जिन लोगों से तुमने खानाए काबा के पास

मुआहेदा किया था तो वह लोग (अपनी एहदो पैमान) तुमसे क़ायम रखना चाहें तो तुम भी उनसे (अपना एहद) क़ायम रखो बेशक ख़ुदा (बद एहदी से) परहेज़ करने वालों को दोस्त रखता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**
विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि जब मुशरिकों ने अपना वचन तोड़ा, तो उनका कोई विश्वास नहीं रह सकता। इसके बाद, कुछ लोगों से वचन बनाए रखने का निर्देश दिया गया।**
- **Nyaya दर्शन के अनुसार, "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के तहत, किसी भी आदेश का एक स्पष्ट कारण होना चाहिए। यहाँ पर यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि क्यों मुशरिकों से वचन तोड़े जाने के बाद भी कुछ लोगों से वचन रखा जा सकता है।**

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया कि क्यों कुछ विशेष लोग जिनसे मुआहेदा किया गया, उनके साथ वचन रखा जाए, जबकि अन्य के साथ नहीं।

आयत 8 (सूरए तौबा, 9:8)

अनुवाद: "उनका एहद क्योंकर (रह सकता है) जब (उनकी ये हालत है) कि अगर तुम पर ग़लबा पा जाए तो तुम्हारे में न तो रिश्ते नाते ही का लिहाज़ करेगें और न अपने क़ौल व क़रार का ये लोग तुम्हें अपनी ज़बानी (जमा खर्च में) खुश कर देते हैं हालाँकि उनके दिल नहीं मानते और उनमें के बहुतेरे तो बदचलन हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Prameya (Object of Knowledge)**
विश्लेषण:

- **इस आयत में मुशरिकों के विश्वासों और व्यवहारों की आलोचना की गई है, और यह कहा गया है कि वे रिश्ते-नातों का लिहाज़ नहीं करते।**
- **Nyaya दर्शन में "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी भी विश्वास का एक प्रमाणिक और तात्त्विक आधार होना चाहिए। इस आयत में केवल आरोप लगाए गए हैं, लेकिन उनका कोई प्रमाण या वास्तविक उदाहरण नहीं दिया गया है कि ये लोग सचमुच रिश्ते-नातों का पालन नहीं करते।**

निष्कर्ष: यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें आरोप तो हैं, लेकिन उनका कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है। इसे केवल विश्वास पर आधारित एक सामान्य आरोप कहा जा सकता है।

आयत 9 (सूरए तौबा, 9:9)

अनुवाद: "और उन लोगों ने ख़ुदा की आयतों के बदले थोड़ी सी क़ीमत (दुनियावी फायदे) हासिल करके (लोगों को) उसकी राह से रोक दिया बेशक ये लोग जो कुछ करते हैं ये बहुत ही बुरा है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**
विश्लेषण:

- इस आयत में यह कहा गया है कि लोग ख़ुदा की आयतों के बदले दुनिया का लाभ उठाते हैं। इसका कारण (Hetu) यह बताया गया है कि वे ख़ुदा की राह से लोगों को रोकते हैं।
- Nyaya दर्शन में किसी भी घटना या कार्य का कारण स्पष्ट होना चाहिए, लेकिन इस आयत में यह नहीं बताया गया कि क्यों लोग ख़ुदा की आयतों का पालन नहीं करते और इसके बदले दुनियावी लाभ की ओर आकर्षित होते हैं।

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यहाँ कारण का स्पष्ट और तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। इसे केवल एक नैतिक आरोप माना जा सकता है।

आयत 10 (सूरए तौबा, 9:10)

अनुवाद: "ये लोग किसी मोमिन के बारे में न तो रिश्ता नाता ही कर लिहाज़ करते हैं और न क़ौल का क़रार का और (वाक़ई) यही लोग ज़्यादती करते हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Knowledge)**
विश्लेषण:

- इस आयत में यह कहा गया है कि लोग मोमिनों के साथ रिश्ता नहीं रखते हैं और उनके क़रार का पालन नहीं करते हैं।

- Nyaya दर्शन के "Pramana" (प्रमाणित ज्ञान) के सिद्धांत के तहत, इस प्रकार के आरोपों का प्रमाण और व्यावहारिक आधार होना चाहिए, लेकिन इस आयत में कोई प्रमाण नहीं दिया गया है कि यह लोग सचमुच मोमिनों के साथ रिश्ता नहीं रखते हैं।

निष्कर्ष: यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह केवल एक आरोप है, जिसका कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में मुशरिकों और उनके व्यवहारों के बारे में विभिन्न आरोप लगाए गए हैं, लेकिन इन आरोपों का कोई ठोस प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी धार्मिक या सामाजिक आदेश का स्पष्ट कारण और प्रमाणित ज्ञान होना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है। इन आयतों को केवल विश्वासों और आरोपों पर आधारित माना जा सकता है, जो वैज्ञानिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं हैं।

आयत 11-15 (सूरए तौबा, 9:11-15)

आयत 11 (सूरए तौबा, 9:11)

अनुवादः "तो अगर (अभी मुशरिक से) तौबा करें और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं और हम अपनी आयतों को वाक़िफकार लोगों के वास्ते तफ़सीलन बयान करते हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- इस आयत में यह कहा गया है कि अगर मुशरिक तौबा करें, नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें, तो वे मुसलमानों के भाई होंगे।
- Nyaya दर्शन के "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, यह एक व्यावहारिक और प्रमाणित ज्ञान की बात होनी चाहिए, लेकिन इस आयत में तौबा, नमाज़, और ज़कात का यह निर्देश एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसमें कोई वस्तुनिष्ठ प्रमाण नहीं दिया गया है। यह केवल एक नैतिक आदेश है और इसे सत्य ज्ञान के रूप में प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष: यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए निर्देश धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, और इसका कोई व्यावहारिक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 12 (सूरए तौबा, 9:12)

अनुवाद: "और अगर ये लोग एहद कर चुकने के बाद अपनी क़समें तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तुमको ताना दें तो तुम कुफ्र के सरवर आवारा लोगों से खूब लड़ाई करो उनकी क़समें का हरगिज़ कोई एतबार नहीं ताकि ये लोग (अपनी शरारत से) बाज़ आएँ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**
विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि अगर मुशरिक अपनी क़समें तोड़ते हैं और मुसलमानों को ताना देते हैं, तो उनसे लड़ाई की जाए।**
- **Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य सम्बंध) के सिद्धांत के अनुसार, यदि कोई कार्य किया जाता है, तो उसका परिणाम स्पष्ट रूप से निर्धारित होना चाहिए। यहाँ पर यह आदेश तो दिया गया है कि लड़ाई की जाए, लेकिन इसके परिणाम और इसकी अनिवार्यता को स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है। यह केवल एक सामान्य आदेश है, जिसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया कि इस आदेश का निश्चित और अनिवार्य परिणाम क्या होगा।**

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें परिणाम का कोई निश्चित और अनिवार्य सम्बंध नहीं है, जो किसी तात्त्विक आदेश से जुड़े होते हैं।

आयत 13 (सूरए तौबा, 9:13)

अनुवाद: "(मुसलमानों) भला तुम उन लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी क़समें को तोड़ डाला और रसूल को निकाल बाहर करना (अपने दिल में) ठान लिया था और तुमसे पहले छेड़ भी उन्होंने ही शुरू की थी। क्या तुम उनसे डरते हो तो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो ख़ुदा उनसे कहीं बढ़ कर तुम्हारे डरने के क़ाबिल है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**
विश्लेषण:

- **इस आयत में पूछा गया है कि यदि लोग क़समें तोड़ते हैं और रसूल को बाहर करने की योजना बनाते हैं, तो उनसे क्यों नहीं लड़ा जाता।**

- Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, हर आदेश या कार्य का एक स्पष्ट कारण होना चाहिए। यहाँ पर यह कहा गया है कि यदि लोग पहले से शरारत करते आए हैं, तो उनसे लड़ा जाए, लेकिन इस आदेश का कोई स्पष्ट और तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है कि क्यों यह लड़ाई उचित है, जब वे पहले शरारत कर रहे थे।

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें इस आदेश का कोई स्पष्ट तात्त्विक कारण नहीं बताया गया है। यह केवल एक सामान्य आदेश है जो पुराने कार्यों पर आधारित है।

आयत 14 (सूरए तौबा, 9:14)

अनुवादः "इनसे (बेख़ौफ) लड़ो ख़ुदा तुम्हारे हाथों उनकी सज़ा करेगा और उन्हें रूसवा करेगा और तुम्हें उन पर फतेह अता करेगा और इमानदार लोगों के कलेजे ठन्डे करेगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- इस आयत में यह कहा गया है कि लड़ाई के परिणामस्वरूप, ख़ुदा मुशरिकों को सज़ा देगा और मुसलमानों को विजय देगा।
- Nyaya दर्शन के "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यदि कोई कार्य किया जाता है, तो उसका परिणाम स्पष्ट रूप से निर्धारित होना चाहिए। इस आयत में लड़ाई के बाद निश्चित परिणाम बताया गया है, लेकिन यह "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाता क्योंकि इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है कि इस लड़ाई का परिणाम हमेशा ऐसा ही होगा।

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें लड़ाई के परिणाम के बारे में कोई वैज्ञानिक या सत्य प्रमाण नहीं दिया गया है, जो इसे एक सामान्य आदेश से अलग करता है।

आयत 15 (सूरए तौबा, 9:15)

अनुवादः "और उन मोमिनीन के दिल की कुदरतें जो (कुफ़्फ़ार से पहुचॅती है) दफ़ा कर देगा और ख़ुदा जिसकी चाहे तौबा कुबूल करे और ख़ुदा बड़ा वाक़िफकार (और) हिकमत वाला है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा मोमिनों के दिल को शांति देगा और तौबा स्वीकार करेगा।
- Nyaya दर्शन के "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, इस प्रकार के धार्मिक आदेशों को एक प्रमाणित सत्य ज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन यह केवल एक विश्वास है, जिसका कोई वस्तुनिष्ठ प्रमाण नहीं दिया गया है।

निष्कर्ष: यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें केवल एक धार्मिक विश्वास का प्रस्तुत किया गया है, जो सत्य ज्ञान के रूप में प्रमाणित नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में विभिन्न धार्मिक आदेश और युद्ध संबंधी आदेश दिए गए हैं, लेकिन इनमें से कई आदेश Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते हैं। इन आयतों में तात्त्विक कारण (Hetu), निश्चित परिणाम (Vyapti), और प्रमाणित ज्ञान (Pramana) की कमी है। ये आदेश धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, जिन्हें वैज्ञानिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से प्र**आयत 16-20 (सूरए तौबा, 9:16-20)**

आयत 16 (सूरए तौबा, 9:16)

अनुवाद: "क्या तुमने ये समझ लिया है कि तुम (यूँ ही) छोड़ दिए जाओगे और अभी तक तो ख़ुदा ने उन लोगों को मुमताज़ किया ही नहीं जो तुम में के (राहे ख़ुदा में) जिहाद करते हैं और ख़ुदा और उसके रसूल और मोमेनीन के सिवा किसी को अपना राज़दार दोस्त नहीं बनाते और जो कुछ भी तुम करते हो ख़ुदा उससे बाख़बर है।"

आधारित तत्व **(Nyaya Element)**: Hetu (Reason)
विश्लेषण:

- इस आयत में यह कहा गया है कि केवल वही लोग सही हैं जो ख़ुदा, उसके रसूल और मोमेनीन को अपना साथी मानते हैं और जिहाद करते हैं।
- Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, कोई भी आदेश या कार्य तब ही तात्त्विक होता है जब उसका कारण स्पष्ट रूप से सिद्ध हो। इस आयत में इस आदेश का कोई कारण नहीं बताया गया कि क्यों केवल वही लोग सही हैं जो ख़ुदा, उसके रसूल और मोमेनीन को अपना साथी मानते हैं। इस पर कोई तात्त्विक या प्रमाणित आधार नहीं है।

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें आदेश का कोई तात्त्विक कारण या प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 17 (सूरए तौबा, 9:17)

अनुवाद: "मुशरेकीन का ये काम नहीं कि जब वह अपने कुफ्ऱ का ख़ुद इक़रार करते हैं तो ख़ुदा की मस्जिदों को (जाकर) आबाद करे यही वह लोग हैं जिनका किया कराया सब अकारत हुआ और ये लोग हमेशा जहन्नुम में रहेंगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि मुशरिकों का काम नहीं है कि वे ख़ुदा की मस्जिदों को आबाद करें, क्योंकि उनके किए गए कार्य अकारथ हैं।**
- **Nyaya दर्शन के "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह जरूरी होता है कि किसी कार्य का कारण और उसका परिणाम स्पष्ट रूप से अनिवार्य सम्बंध में होना चाहिए। यहाँ पर यह बताया गया है कि मुशरिकों का कोई कार्य अकारथ है, लेकिन इस निष्कर्ष का कोई स्थिर प्रमाण या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है कि क्यों उनके कार्य अकारथ माने जाएं।**

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कार्य और उसके परिणाम के बीच अनिवार्य सम्बंध की कमी है।

आयत 18 (सूरए तौबा, 9:18)

अनुवाद: "ख़ुदा की मस्जिदों को बस सिर्फ वहीं शख़्स (जाकर) आबाद कर सकता है जो ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाए और नमाज़ पढ़ा करे और ज़कात देता रहे और ख़ुदा के सिवा (और) किसी से न डरो तो अनक़रीब यही लोग हिदायत याफ़्ता लोगों मे से हो जाएंगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:

- **इस आयत में यह बताया गया है कि केवल वही लोग ख़ुदा की मस्जिदों को आबाद कर सकते हैं, जो ईमान लाते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, और ज़कात देते हैं।**

- Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का विषय) के सिद्धांत के अनुसार, किसी वस्तु का ज्ञान सही तभी होता है जब उसे सही ढंग से पहचाना जाए। यहाँ पर यह आयत एक विशिष्ट उद्देश्य (ख़ुदा की मस्जिदों की आबादी) की ओर इशारा कर रही है, लेकिन इस आदेश का कोई व्यावहारिक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है, जो इसे सत्य ज्ञान के रूप में स्थापित कर सके।

निष्कर्ष: यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ज्ञान का विषय केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 19 (सूरए तौबा, 9:19)

अनुवाद: "क्या तुम लोगों ने हाजियों की सक़ाई (पानी पिलाने वाले) और मस्जिदुल हराम (ख़ानाए काबा की आबादियों को उस शख़्स के हमसर (बराबर) बना दिया है जो ख़ुदा और रोज़े आख़ेरत के दिन पर ईमान लाया और ख़ुदा के राह में जेहाद किया ख़ुदा के नज़दीक तो ये लोग बराबर नहीं और खुदा ज़ालिम लोगों की हिदायत नहीं करता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- इस आयत में यह कहा गया है कि हाजी पानी पिलाने वाले और मस्जिदुल हराम की सेवा करने वाले लोग उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकते, जो ख़ुदा और रोज़े आख़ेरत पर ईमान लाता है और जेहाद करता है।
- Nyaya दर्शन के "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, इस आदेश में दो कार्यों का आपस में तुलनात्मक रूप से अनुपात नहीं है। यह केवल एक अपेक्षात्मक दृष्टिकोण है, जिसमें स्पष्ट और प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है कि क्यों एक कार्य दूसरे के बराबर नहीं हो सकता।

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कार्यों के बीच कोई स्पष्ट और अनिवार्य सम्बंध नहीं है।

आयत 20 (सूरए तौबा, 9:20)

अनुवाद: "जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और (ख़ुदा के लिए) हिजरत एख़्तियार की और अपने मालों से और अपनी जानों से ख़ुदा की राह में जिहाद किया वह लोग ख़ुदा के नज़दीक दर्जे में कही बढ़ कर हैं और यही लोग (आला दर्जे पर) फायज़ होने वाले हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**
विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि जो लोग ईमान लाते हैं और जिहाद करते हैं, वे ख़ुदा के नज़दीक उच्च स्थान पर होंगे।**
- **Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, यहाँ इस आदेश का कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया है कि क्यों केवल वे लोग जो ईमान लाते हैं और जिहाद करते हैं, उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। यह केवल एक धार्मिक विश्वास है, जो किसी तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार पर आधारित नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कार्य और उसके परिणाम के बीच स्पष्ट और प्रमाणित कारण का अभाव है।

सारांश:

इन आयतों में धार्मिक और सामाजिक आदेश दिए गए हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में तात्त्विक कारण (Hetu), कार्य और परिणाम के बीच अनिवार्य सम्बंध (Vyapti), और सत्य ज्ञान (Prameya) की कमी है। ये आदेश धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनके तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं।

आयत 21-25 (सूरए तौबा, 9:21-25) का विश्लेषण

आयत 21-22

अनुवाद:
"उनका परवरदिगार उनको अपनी मेहरबानी और ख़ुषनूदी और ऐसे (हरे भरे) बाग़ों की ख़ुशख़बरी देता है जिसमें उनके लिए दाइमी ऐश व (आराम) होगा।"
"और ये लोग उन बाग़ों में हमेशा अब्दआलाबाद (हमेशा हमेशा) तक रहेंगे। बेशक ख़ुदा के पास तो बड़ा बड़ा अज्र व (सवाब) है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Means of Knowledge)**
विश्लेषण:

- **इन आयतों में "हरे भरे बाग़ों" और "दाइमी ऐश" का उल्लेख है, जो स्वर्ग के सुख को दर्शाता है।**

- Nyaya दर्शन के "Pramana" सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान का कोई भी विषय तभी प्रमाणिक होता है जब वह प्रत्यक्ष (Perception), अनुमान (Inference), उपमान (Comparison), या शब्द प्रमाण (Verbal Testimony) द्वारा सत्य सिद्ध हो।
- इस संदर्भ में, "स्वर्ग" और उसके सुखों का वर्णन न तो प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है, न ही इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण है। यह केवल विश्वास और आस्था पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत के अंतर्गत प्रमाणिक नहीं है क्योंकि इसमें बताए गए कथन का कोई प्रत्यक्ष, अनुमानित या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 23

अनुवाद:
"ऐ ईमानदारों, अगर तुम्हारे माँ-बाप और तुम्हारे (भाई) बहन ईमान के मुक़ाबले कुफ्र को तरजीह देते हों तो तुम उनको (अपना) ख़ैर ख़्वाह (हमदर्द) न समझो और तुममें जो शख़्स उनसे उलफ़त रखेगा तो यही लोग ज़ालिम हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- आयत में यह कहा गया है कि अगर कोई व्यक्ति ईमान के बजाय कुफ्र को चुनता है, तो उससे प्रेम करना या उसे हमदर्द मानना गलत है।
- Nyaya दर्शन के "Vyapti" (कार्य और परिणाम के सम्बंध) सिद्धांत के अनुसार, यह आवश्यक है कि कार्य और उसके परिणाम के बीच अनिवार्य सम्बंध हो। यहाँ यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि केवल "कुफ्र" को चुनने से कोई व्यक्ति ज़ालिम कैसे बनता है।
- माता-पिता या परिवार के प्रति प्रेम का नैतिक मूल्य इस कथन के विपरीत है और सार्वभौमिक मानव मूल्य के साथ मेल नहीं खाता।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत के अंतर्गत तार्किक नहीं है क्योंकि इसमें कार्य (कुफ्र) और परिणाम (ज़ालिम होने) के बीच कोई अनिवार्य सम्बंध सिद्ध नहीं किया गया है।

आयत 24

अनुवाद:

"ऐ रसूल, तुम कह दो, तुम्हारे बाप-दादा, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीबियाँ, तुम्हारे कुनबे वाले, वह माल जो तुमने कमा के रखा है, वह व्यापार जिससे मन्द पड़ने का अन्देशा है और वे मकान जो तुम पसन्द करते हो, यदि ये चीज़ें तुम्हें ख़ुदा, उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा प्रिय हैं, तो ठहरो, यहाँ तक कि ख़ुदा अपना हुक्म (अज़ाब) भेजे। ख़ुदा नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं करता।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आयत में यह दावा किया गया है कि यदि कोई व्यक्ति अपने परिवार, संपत्ति और व्यापार को ख़ुदा और उसके आदेशों से अधिक प्राथमिकता देता है, तो यह गलत है।**
- **Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) सिद्धांत के अनुसार, किसी आदेश या निष्कर्ष का कारण स्पष्ट और तर्कसंगत होना चाहिए। यहाँ यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि क्यों अपने परिवार और संपत्ति को प्राथमिकता देना अनुचित है।**
- **यह आयत मानवीय प्रेम और परिवार के प्रति उत्तरदायित्व के सार्वभौमिक मूल्य के विपरीत है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार तात्त्विक रूप से त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि इसमें आदेश का कारण स्पष्ट और तर्कसंगत नहीं है।

आयत 25

अनुवाद:

"मुसलमानों, ख़ुदा ने तुम्हारी बहुतेरे मक़ामात पर (ग़ैबी) इमदाद की और (ख़ासकर) जंग हुनैन के दिन जब तुम्हें अपनी क़सरत (तादाद) ने मग़रूर कर दिया था फिर वह क़सरत तुम्हें कुछ भी काम न आयी और (तुम ऐसे घबराए कि) ज़मीन बावजूद उस वसअत (फैलाव) के तुम पर तंग हो गई, तुम पीठ कर भाग निकले।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **आयत में "ग़ैबी मदद" का उल्लेख है, जो एक अदृश्य शक्ति द्वारा सहायता का दावा करता है।**

- **Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का विषय) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी ज्ञान का प्रमाण होना चाहिए। "ग़ैबी मदद" का कोई प्रत्यक्ष या तात्त्विक प्रमाण नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
- **आयत में कहा गया है कि अधिक संख्या (क़सरत) घमंड का कारण बनी, लेकिन यह भी बिना किसी प्रमाणिक कारण के दावा किया गया है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार प्रमाणिक नहीं है, क्योंकि "ग़ैबी मदद" और "क़सरत के घमंड" का कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

सारांश

आयत 21-25 में व्यक्त विचार धार्मिक विश्वास और आस्था पर आधारित हैं, लेकिन ये Nyaya दर्शन के तात्त्विक सिद्धांतों (Pramana, Hetu, Vyapti) के अनुसार प्रमाणित नहीं हैं। इन आयतों में मानवता के सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों और तर्कसंगतता का अभाव है।

आयत 26-30 (सूरए तौबा, 9:26-30) का विश्लेषण

आयत 26

अनुवाद:
"तब ख़ुदा ने अपने रसूल पर और मोमिनीन पर अपनी (तरफ से) तसकीन नाज़िल फरमाई और (रसूल की ख़ातिर से) फरिश्तों के लश्कर भेजे जिन्हें तुम देखते भी नहीं थे और कुफ़्फ़ार पर अज़ाब नाज़िल फरमाया और काफिरों की यही सज़ा है।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Means of Knowledge)
विश्लेषण:

- **आयत में "फरिश्तों के लश्कर" और "कुफ़्फ़ार पर अज़ाब" जैसे दावों का उल्लेख किया गया है, लेकिन इन्हें सत्यापित करने के लिए कोई प्रत्यक्ष प्रमाण, तर्क, या साक्ष्य नहीं दिया गया है।**
- **Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे की प्रमाणिकता के लिए प्रत्यक्ष अनुभव, अनुमान, उपमान या शब्द प्रमाण आवश्यक है।**
- **यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है और किसी प्रकार के तर्कसंगत प्रमाण से रहित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Pramana के सिद्धांत के अंतर्गत प्रमाणित नहीं है क्योंकि इसमें किए गए दावे का कोई तार्किक आधार नहीं है।

आयत 27

अनुवाद:

"उसके बाद ख़ुदा जिसकी चाहे तौबा कुबूल करे और ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आयत में यह दावा किया गया है कि केवल ख़ुदा की इच्छा से तौबा कुबूल की जाती है।**
- **Nyaya दर्शन के अनुसार, "Hetu" या कारण स्पष्ट और सार्वभौमिक होना चाहिए। यहाँ यह नहीं बताया गया कि किस आधार पर ख़ुदा तौबा स्वीकार करता है और किसे अस्वीकार करता है।**
- **यह विचार न्याय और निष्पक्षता के सार्वभौमिक मानकों के विपरीत है, क्योंकि तौबा को स्वीकार करने का आधार स्वेच्छा पर आधारित है, न कि किसी तर्कसंगत नियम पर।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu के सिद्धांत के अनुसार तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यह न्याय और निष्पक्षता की कसौटी पर खरा नहीं उतरती।

आयत 28

अनुवाद:

"ऐ ईमानदारों, मुशरेकीन तो निरे नजिस हैं तो अब वह उस साल के बाद मस्जिदुल हराम (ख़ाना ए काबा) के पास फिर न फटकने पाएँ। और अगर तुम (उनसे जुदा होने में) फक़रों फाक़ा से डरते हो तो अनकरीब ही ख़ुदा तुमको अगर चाहेगा तो अपने फ़ज़ल (करम) से ग़नीकर देगा। बेशक ख़ुदा बड़ा वाकिफ़कार हिकमत वाला है।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- इस आयत में ”मुशरेकीन” को ”निर्मल नजिस” (अपवित्र) कहा गया है और उन्हें मस्जिदुल हराम के पास आने से रोका गया है।
- Nyaya दर्शन के ”Vyapti” सिद्धांत के अनुसार, किसी निष्कर्ष को प्रमाणित करने के लिए कार्य और परिणाम के बीच अनिवार्य सम्बंध होना चाहिए।
- इस आयत में यह नहीं स्पष्ट किया गया कि केवल ”मुशरेकीन” को अपवित्र मानने का तार्किक आधार क्या है।
- यह आयत धार्मिक भेदभाव को बढ़ावा देती है, जो मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों के विपरीत है।

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत के अनुसार तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि इसमें ”मुशरेकीन” को अपवित्र मानने का कोई स्पष्ट कारण या प्रमाण नहीं है।

आयत 29

अनुवाद:
”ऐहले किताब में से जो लोग न तो *(दिल से)* ख़ुदा ही पर इमान रखते हैं और न रोज़े आख़िरत पर और न ख़ुदा और उसके रसूल की हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन ही को एख़्तियार करते हैं*,* उन लोगों से लड़े जाओ यहाँ तक कि वह लोग ज़लील होकर *(*अपने*)* हाथ से जजिया दें। *”*

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:

- इस आयत में ”ऐहले किताब” (यहूदी और ईसाई) से लड़ने का आदेश दिया गया है जब तक वे जजिया कर न दें।
- Nyaya दर्शन के ”Prameya” सिद्धांत के अनुसार, किसी कार्य का उद्देश्य और उसका औचित्य स्पष्ट होना चाहिए।
- यह आयत धार्मिक असहिष्णुता और भेदभाव को बढ़ावा देती है, जो सार्वभौमिक मानवाधिकारों के विपरीत है।
- यहाँ यह स्पष्ट नहीं है कि केवल ”जजिया” देने से कोई व्यक्ति ज़लील क्यों होता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Prameya के सिद्धांत के अनुसार तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि इसमें उद्देश्य और औचित्य का अभाव है।

आयत 30

अनुवाद:
"यहूद तो कहते हैं कि अज़ीज़ ख़ुदा के बेटे हैं और नुसैरा कहते हैं कि मसीहा (ईसा) ख़ुदा के बेटे हैं। ये तो उनकी बात है और (वह ख़ुद) उन्हीं के मुँह से। ये लोग भी उन्हीं काफ़िरों की सी बातें बनाने लगे जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं। ख़ुद उनको क़त्ल (तहस-नहस) करके (देखो तो) कहाँ से कहाँ भटके जा रहे हैं।"

Nyaya तत्व: Hetvabhasa (Fallacious Reasoning)
विश्लेषण:

- **इस आयत में यहूदियों और ईसाइयों के विश्वास को नकारा गया है और उन्हें काफ़िर कहकर संबोधित किया गया है।**
- **Nyaya दर्शन के "Hetvabhasa" (भ्रमित तर्क) के सिद्धांत के अनुसार, किसी तर्क का आधार स्पष्ट और त्रुटिहीन होना चाहिए।**
- **यहाँ यहूदियों और ईसाइयों के विश्वास को केवल "भटके हुए" कहकर खारिज करना एक भ्रमित तर्क है, क्योंकि उनके धार्मिक विश्वास का आधार उनके धर्मग्रंथों में है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Hetvabhasa के सिद्धांत के अनुसार त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि इसमें किए गए दावे का तर्कसंगत आधार नहीं है।

सारांश

आयत 26-30 में व्यक्त विचार तर्क और प्रमाण के अभाव में आस्था और विश्वास पर आधारित हैं। ये आयतें Nyaya दर्शन के तत्वों (Pramana, Hetu, Vyapti, Prameya) के मानकों पर खरी नहीं उतरतीं और इनमें धार्मिक भेदभाव तथा मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों के उल्लंघन के प्रमाण मिलते हैं।

आयत 31-35 (सूरए तौबा, 9:31-35) का विश्लेषण

आयत 31

अनुवादः
"उन लोगों ने तो अपने ख़ुदा को छोड़कर अपनी आलिमों को और अपने ज़ाहिदों को और मरियम के बेटे मसीह को अपना परवरदिगार बना डाला, हालाँकि उन्हें सिवाए इसके और हुक्म ही नहीं दिया गया कि ख़ुदा-ए-यकता की इबादत करें। उसके सिवा और कोई क़ाबिले परसतिश नहीं।"

Nyaya तत्वः Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषणः

- इस आयत में यहूदियों और ईसाइयों की धार्मिक प्रथाओं पर आरोप लगाया गया है कि उन्होंने अपने धार्मिक नेताओं और मसीह को ईश्वर बना लिया।
- Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी वस्तु या सिद्धांत को सत्यापित करने के लिए उसका स्पष्ट उद्देश्य और प्रमाण होना चाहिए।
- यहाँ आरोप लगाया गया है, लेकिन इसे साबित करने के लिए कोई ऐतिहासिक या तार्किक प्रमाण नहीं दिया गया।
- यह तर्क "सभी ईश्वर के रूप को अस्वीकार करना" के आधार पर दूसरे धर्मों की आस्था का अपमान करता है।

निष्कर्षः
यह आयत Prameya के सिद्धांत के अनुसार तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि इसमें दावे का उद्देश्य और प्रमाण स्पष्ट नहीं है।

आयत 32

अनुवादः
"ये लोग चाहते हैं कि अपने मुँह से (फूँक मारकर) ख़ुदा के नूर को बुझा दें और ख़ुदा इसके सिवा कुछ मानता ही नहीं कि अपने नूर को पूरा ही करके रहे।"

Nyaya तत्वः Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषणः

- इस आयत में "ख़ुदा के नूर को बुझाने" का दावा किया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि इस नूर का क्या तात्पर्य है।
- Nyaya दर्शन के "Vyapti" सिद्धांत के अनुसार, दावा और परिणाम के बीच स्पष्ट और अनिवार्य सम्बंध होना चाहिए।

- **इस कथन में "ख़ुदा का नूर" और उसे "बुझाने का प्रयास" के दावे का कोई प्रत्यक्ष उदाहरण या कारण नहीं दिया गया है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के मानकों पर खरी नहीं उतरती क्योंकि इसमें दावा अस्पष्ट और अनिश्चित है।

आयत 33

अनुवाद:
"वही तो (वह ख़ुदा) है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब करे, अगरचे मुशरेकीन बुरा मानें।"

Nyaya तत्व: Hetvabhasa (Fallacious Reasoning)
विश्लेषण:

- **यहाँ दावा किया गया है कि इस्लाम को सभी धर्मों पर प्रभुत्व प्राप्त होगा।**
- **Nyaya दर्शन के अनुसार, यह तर्क त्रुटिपूर्ण है क्योंकि प्रभुत्व का आधार तार्किक और नैतिक सिद्धांतों पर होना चाहिए।**
- **इस आयत में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि "सच्चा दीन" केवल इस्लाम क्यों है और अन्य धर्म क्यों नहीं।**
- **यह कथन धार्मिक असहिष्णुता को प्रोत्साहित करता है, जो सार्वभौमिक मानवता के सिद्धांतों का उल्लंघन है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Hetvabhasa का उदाहरण है क्योंकि यह तर्कसंगत प्रमाण के बिना एक पक्षपाती दावा करती है।

आयत 34

अनुवाद:
"ऐ ईमानदारों, इसमें कोई शक नहीं कि (यहूद व नसारा के) बहुतेरे आलिम और ज़ाहिद लोगों के माल नाहक़ चख जाते हैं और (लोगों को) ख़ुदा की राह से रोकते हैं। और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते हैं और उसे ख़ुदा की राह में खर्च नहीं करते, तो (ऐ रसूल) उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- **यहाँ यहूदियों और ईसाइयों के धार्मिक नेताओं पर भ्रष्टाचार और स्वार्थ का आरोप लगाया गया है।**
- **Nyaya दर्शन के "Pramana" तत्व के अनुसार, किसी आरोप को साबित करने के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण, ऐतिहासिक साक्ष्य, या तार्किक तर्क आवश्यक हैं।**
- **इस आयत में न तो इन आरोपों के लिए कोई प्रमाण दिया गया है और न ही यह स्पष्ट किया गया है कि कौन-से धार्मिक नेता ऐसा करते हैं।**

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के सिद्धांत के अनुसार तर्कसंगत नहीं है क्योंकि यह प्रमाण के बिना आरोप लगाती है।

आयत 35

अनुवाद:
"जिस दिन वह (सोना-चाँदी) जहन्नुम की आग में गर्म किया जाएगा, फिर उससे उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दागी जाएँगी। उनसे कहा जाएगा, यह वह है जिसे तुमने अपने लिए (दुनिया में) जमा करके रखा था, तो अब अपने जमा किए का मज़ा चखो।"

Nyaya तत्व: Arthapatti (Presumption)
विश्लेषण:

- **इस आयत में दावा किया गया है कि जो लोग सोना-चाँदी जमा करते हैं और उसे "ख़ुदा की राह" में खर्च नहीं करते, उन्हें जहन्नुम में सज़ा दी जाएगी।**
- **Nyaya दर्शन के "Arthapatti" के अनुसार, किसी निष्कर्ष को तर्कसंगत और प्रमाणित करने के लिए स्पष्टीकरण और उदाहरण आवश्यक हैं।**
- **यह स्पष्ट नहीं है कि "ख़ुदा की राह" से क्या तात्पर्य है और इस दंड का नैतिक आधार क्या है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Arthapatti के मानकों पर खरी नहीं उतरती क्योंकि इसमें दावे का आधार अस्पष्ट और प्रमाणहीन है।

सारांश

आयत 31-35 में व्यक्त विचार Nyaya दर्शन के तत्वों (Prameya, Vyapti, Hetvabhasa, Pramana, Arthapatti) के अनुसार तर्कसंगत नहीं हैं। इन आयतों में धार्मिक असहिष्णुता, पक्षपात, और अप्रमाणित आरोपों का उल्लेख है, जो मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों के विपरीत हैं।

आयत 36-40 (सूरह तौबा, 9:36-40) का विश्लेषण

आयत 36

अनुवाद:
"इसमें तो शक नहीं कि ख़ुदा ने जिस दिन आसमान और ज़मीन को पैदा किया, उसी दिन से ख़ुदा के नज़दीक ख़ुदा की किताब में महीनों की गिनती बारह महीने है, उनमें से चार महीने हुरमत के हैं। यही दीन सीधी राह है। तो उन चार महीनों में तुम अपने ऊपर (मार-काट करके) ज़ुल्म न करो और मुशरिक लोग जिस तरह तुमसे सब मिलकर लड़ते हैं, तुम भी उनसे सब मिलकर लड़ो। और जान लो कि ख़ुदा यक़ीनन परहेज़गारों के साथ है। "

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- इस आयत में बारह महीनों और चार "हराम महीनों" का ज़िक्र है, जिन्हें शांति और आदर का समय बताया गया है।
- Nyaya दर्शन के अनुसार, "Pramana" सत्य ज्ञान का स्रोत है। यहां "हराम महीनों" की अवधारणा का ऐतिहासिक और वैज्ञानिक प्रमाण नहीं दिया गया है।
- यह कथन पूरी तरह धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे किसी सार्वभौमिक सत्य या मानवता के लाभ के रूप में तर्कसंगत नहीं ठहराया जा सकता।
- इसमें "मुशरिकों" से सामूहिक युद्ध की बात कही गई है, जो शांति और अहिंसा के सिद्धांतों के विपरीत है।

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के सिद्धांत के अनुसार प्रमाणहीन और हिंसा को प्रोत्साहित करने वाली है।

आयत 37

अनुवाद:

"महीनों का आगे-पीछे कर देना भी कुफ्र ही की ज़्यादती है। इसकी बदौलत काफ़िर लोग बहक जाते हैं। "

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **"महीनों का आगे-पीछे करना" और इसे "कुफ्र" बताना तर्कहीन है।**
- **Nyaya दर्शन के "Vyapti" तत्व के अनुसार, किसी कारण और परिणाम के बीच स्पष्ट और अनिवार्य संबंध होना चाहिए।**
- **यहाँ यह दावा अस्पष्ट है कि कैलेंडर परिवर्तन किसी धार्मिक कृत्य को कैसे प्रभावित करता है।**
- **इस कथन का उद्देश्य लोगों को डराने और विभाजन पैदा करने जैसा प्रतीत होता है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Vyapti के तर्क को पूरा नहीं करती क्योंकि इसमें कारण और परिणाम के बीच स्पष्ट संबंध की कमी है।

आयत 38

अनुवाद:

"ऐ ईमानदारों, तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि ख़ुदा की राह में (जिहाद के लिए) निकलो, तो तुम ढीले हो जाते हो? क्या तुम आख़िरत की बजाय दुनिया की चंद रोज़ा ज़िंदगी को पसंद करते हो?"

Nyaya तत्व: Hetvabhasa (Fallacious Reasoning)

विश्लेषण:

- **यहाँ "जिहाद" को "ख़ुदा की राह" में जाने का आदेश बताया गया है।**
- **Nyaya दर्शन में, किसी भी तर्क को तार्किक रूप से प्रमाणित किया जाना चाहिए।**
- **"दुनिया की चंद रोज़ा ज़िंदगी" को "आख़िरत" से कमतर बताने का कोई तार्किक आधार नहीं है।**
- **यह कथन मानवीय भावनाओं को भय और लालच के माध्यम से नियंत्रित करने का प्रयास है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetvabhasa का उदाहरण है क्योंकि यह तर्कहीन और भय आधारित प्रेरणा का उपयोग करती है।

आयत 39

अनुवाद:
"अगर (अब भी) तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुम पर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल करेगा और तुम्हारे बदले किसी दूसरी क़ौम को ले आएगा।"

Nyaya तत्व: Arthapatti (Presumption)
विश्लेषण:

- इस आयत में "दर्दनाक अज़ाब" की चेतावनी दी गई है।
- Nyaya दर्शन के "Arthapatti" के अनुसार, किसी निष्कर्ष को प्रमाणित करने के लिए तर्क और साक्ष्य की आवश्यकता होती है।
- यहाँ "अज़ाब" और "दूसरी क़ौम" को लाने की बात कही गई है, लेकिन इसका कोई ठोस आधार या उद्देश्य स्पष्ट नहीं किया गया।

निष्कर्ष:
यह आयत Arthapatti के मानकों पर खरी नहीं उतरती क्योंकि यह तर्कहीन भय और धमकी पर आधारित है।

आयत 40

अनुवाद:
"अगर तुम रसूल की मदद न करोगे तो ख़ुदा उनकी मदद करेगा, जैसे उस वक्त की जब उन्हें निकाल दिया गया और वह दो आदमी ग़ार में थे।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:

- इस आयत में पैगंबर मुहम्मद के जीवन की एक घटना का ज़िक्र है।
- Nyaya दर्शन के "Prameya" तत्व के अनुसार, वस्तु या घटना को तर्कसंगत और प्रमाणित किया जाना चाहिए।
- इस कथन में कोई ऐतिहासिक प्रमाण या तथ्यात्मक जानकारी नहीं है।
- यह घटना केवल विश्वास आधारित है और इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत करना तर्कहीन है।

निष्कर्ष:
यह आयत Prameya के सिद्धांत पर खरी नहीं उतरती क्योंकि यह तर्क और प्रमाण की कमी रखती है।

सारांश

आयत 36-40 में व्यक्त विचार Nyaya दर्शन के सिद्धांतों (Pramana, Vyapti, Hetvabhasa, Arthapatti, Prameya) के अनुसार तर्कसंगत नहीं हैं। ये आयतें हिंसा को प्रोत्साहित करती हैं, भय और लालच का उपयोग करती हैं, और धार्मिक विश्वास को बिना प्रमाण के सत्य के रूप में प्रस्तुत करती हैं।
इन आयतों का संदेश मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विपरीत है।

आयत 41-45 (सूरह तौबा, 9:41-45) का विश्लेषण

आयत 41

अनुवाद:
"मुसलमानों, तुम हलके-फुलके हो या भारी-भरकम, जब तुम्हें हुक्म दिया जाए, फौरन चल खड़े हो और अपनी जानों और मालों से ख़ुदा की राह में जिहाद करो। समझ लो कि यही तुम्हारे लिए बेहतर है।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण:

- **यहाँ जिहाद (युद्ध) को हर स्थिति में अनिवार्य बताया गया है, चाहे वह व्यक्तिगत परिस्थितियों के अनुकूल हो या नहीं।**
- **Nyaya दर्शन के Hetu तत्व के अनुसार, किसी भी आदेश या कार्य के लिए स्पष्ट और तर्कपूर्ण कारण होना चाहिए।**
- **आयत में "ख़ुदा की राह" के नाम पर जिहाद करने का आदेश दिया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि यह आदेश मानवता के लिए कैसे लाभकारी है।**
- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता और शांति का यह आदेश हनन करता है।**
- **यह कथन मानव कल्याण और सार्वभौमिक शांति के सिद्धांतों के विपरीत है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के मानक को पूरा नहीं करती क्योंकि इसमें जिहाद के आदेश के पीछे कोई तर्कपूर्ण और सार्वभौमिक कारण नहीं दिया गया।

आयत 42

अनुवाद:
"अगर फौरन लाभ और आसान सफर होता तो ये लोग तुम्हारे साथ चल पड़ते, लेकिन सफर की सख्ती और लंबाई ने उन्हें पीछे रहने पर मजबूर कर दिया।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- **इस आयत में उन लोगों की आलोचना की गई है जो कठिन परिस्थितियों में जिहाद के लिए जाने से बचते हैं।**
- **Nyaya दर्शन के Vyapti तत्व के अनुसार, किसी कार्य के कारण और परिणाम में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।**
- **यहाँ इस तर्क की कोई स्पष्टता नहीं है कि कठिन सफर में शामिल न होना "ख़ुदा की राह" में कमी कैसे साबित करता है।**
- **यह आयत लोगों को प्रेरित करने के बजाय दोषारोपण और अपमान का उपयोग करती है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत पर खरी नहीं उतरती क्योंकि इसमें तर्कपूर्ण संबंध का अभाव है।

आयत 43

अनुवाद:
"ऐ रसूल, ख़ुदा ने तुम्हें माफ़ कर दिया कि तुमने उन्हें (पीछे रहने की) इजाज़त क्यों दी। अगर तुम ऐसा न करते तो सच बोलने वाले अलग हो जाते और झूठे अलग।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- **आयत में पैगंबर को माफ करने की बात कही गई है और सच-झूठ की पहचान को लेकर सवाल उठाया गया है।**
- **Nyaya दर्शन के Pramana तत्व के अनुसार, ज्ञान की पुष्टि करने के लिए तर्क और प्रमाण की आवश्यकता है।**

- "झूठे" और "सच्चे" व्यक्तियों की पहचान की प्रक्रिया तर्क के बजाय दैवीय हस्तक्षेप पर आधारित है।
- इस आयत में तर्कसंगत और प्रमाणित दृष्टिकोण का अभाव है।

निष्कर्ष:
यह आयत **Pramana** के तत्व के अनुसार वैध ज्ञान की कसौटी पर खरी नहीं उतरती।

आयत 44

अनुवाद:
"जो लोग ख़ुदा और आख़िरत पर ईमान रखते हैं, वे अपने माल और जान से जिहाद करने की इजाज़त नहीं मांगते।"

Nyaya तत्व: Anumana (Inference)
विश्लेषण:

- आयत में यह निष्कर्ष दिया गया है कि सच्चे ईमान वाले स्वेच्छा से जिहाद करेंगे।
- Nyaya दर्शन के **Anumana** (अनुमान) तत्व के अनुसार, निष्कर्ष तार्किक और सामान्य अनुभवों पर आधारित होना चाहिए।
- इस आयत में यह मान लिया गया है कि "ईमान" का अर्थ अनिवार्य रूप से जिहाद है।
- यह निष्कर्ष सार्वभौमिक अनुभव और तर्क के आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष:
यह आयत **Anumana** तत्व के तर्क पर खरा नहीं उतरती क्योंकि इसका निष्कर्ष पूर्वाग्रह और धर्म-विशेष पर आधारित है।

आयत 45

अनुवाद:
"जिहाद की इजाज़त केवल वही लोग मांगेंगे जो ख़ुदा और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल संदेह से भरे हुए हैं।"

Nyaya तत्व: Vipratipatti (Contradiction)
विश्लेषण:

- आयत में यह दावा किया गया है कि जिहाद से बचने वाले लोग संदेह में हैं और उनका ईमान कमजोर है।
- Nyaya दर्शन के **Vipratipatti** तत्व के अनुसार, किसी कथन को तब तक सत्य नहीं माना जा सकता जब तक उसमें अंतर्विरोध न हो।
- यहाँ पर जिहाद न करने को "संदेह" और "अविश्वास" से जोड़ा गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया।
- यह कथन उन लोगों के अधिकारों का हनन करता है जो शांति को प्राथमिकता देते हैं।

निष्कर्ष:
यह आयत **Vipratipatti** के तत्व को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि इसमें तार्किक और नैतिक अंतर्विरोध हैं।

सारांश

आयत 41-45 में जिहाद को अनिवार्य बताते हुए मानव स्वतंत्रता, शांति और नैतिकता के सिद्धांतों को नजरअंदाज किया गया है। ये आयतें Nyaya दर्शन के प्रमुख तत्वों (Hetu, Vyapti, Pramana, Anumana, Vipratipatti) के अनुरूप नहीं हैं।
इन आयतों का तर्क भय, दोषारोपण, और अधूरी धारणाओं पर आधारित है, जो मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों और तार्किक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य हैं।

आयत 46-50 (सूरह तौबा, 9:46-50) का विश्लेषण

आयत 46

अनुवाद:
"अगर ये लोग (मुसलमान) घर से निकलने की ठान लेते तो (कुछ न कुछ तैयारी करते), मगर ख़ुदा ने उनके साथ जाने को नापसंद किया और उन्हें काहिल बना दिया। उनसे कहा गया, 'तुम बैठने वालों के साथ बैठे रहो।'"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- इस आयत में दावा किया गया है कि ईश्वर ने कुछ लोगों को जिहाद में शामिल होने से रोका और उन्हें आलसी बना दिया।

- Pramana के अनुसार, किसी भी ज्ञान का स्रोत तर्कसंगत, अनुभवजन्य, या प्रमाणित होना चाहिए।
- यह कथन तर्क और अनुभव पर आधारित नहीं है, बल्कि ईश्वर की इच्छा पर आधारित है, जो प्रमाण की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।
- मानव स्वतंत्रता और नैतिकता का यह कथन उल्लंघन करता है, क्योंकि यह लोगों के कार्यों के लिए उन्हें दोषी ठहराने के बजाय ईश्वर को उत्तरदायी बनाता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के मानक को पूरा नहीं करती क्योंकि इसमें तर्क और प्रमाण का अभाव है।

आयत 47

अनुवादः
"अगर ये लोग तुममें शामिल होते भी तो फसाद ही फैलाते और फितना करने की कोशिश करते।"

Nyaya तत्वः Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषणः

- इस आयत में दावा किया गया है कि कुछ लोग समूह में शामिल होने पर केवल फसाद फैलाएंगे।
- Vyapti के अनुसार, कारण और परिणाम का संबंध स्पष्ट और तर्कसंगत होना चाहिए।
- आयत में बिना किसी सबूत या तर्क के यह निष्कर्ष निकाला गया है कि वे केवल फसाद करेंगे।
- यह कथन भेदभाव और पूर्वाग्रह को प्रोत्साहित करता है, जो नैतिक और तार्किक दृष्टिकोण से अनुचित है।

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि यह बिना प्रमाण के निष्कर्ष पर पहुँचती है।

आयत 48

अनुवादः
"इन लोगों ने पहले ही फसाद फैलाने की कोशिश की और तुम्हारी योजनाओं को उलटने की कोशिश की, लेकिन आख़िरकार ईश्वर का हुक्म ही पूरा हुआ।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आयत में कहा गया है कि इन लोगों ने फसाद फैलाने की कोशिश की, लेकिन उनके प्रयास विफल रहे।**
- **Hetu के अनुसार, किसी घटना के पीछे का कारण स्पष्ट और तर्कसंगत होना चाहिए।**
- **आयत में यह नहीं बताया गया कि वे लोग फसाद फैलाने में कैसे असफल रहे और ईश्वर का हुक्म कैसे लागू हुआ।**
- **यह कथन तर्क और प्रमाण के बिना मात्र विश्वास पर आधारित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu के तत्व के अनुसार पर्याप्त तर्क नहीं देती और केवल ईश्वरीय इच्छा को ही कारण बताती है।

आयत 49

अनुवाद:

"उनमें से कुछ लोग कहते हैं, 'हमें पीछे रहने की इजाज़त दें और हमें बला में न डालें।' लेकिन वे स्वयं बला में गिर चुके हैं, और काफिरों के लिए जहन्नुम तैयार है।"

Nyaya तत्व: Vipratipatti (Contradiction)

विश्लेषण:

- **आयत में कहा गया है कि जो लोग जिहाद में शामिल नहीं होना चाहते, वे "बला" में गिर चुके हैं।**
- **Vipratipatti के अनुसार, किसी भी कथन में अंतर्विरोध नहीं होना चाहिए।**
- **यहाँ "बला" से बचने की कोशिश को "बला में गिरना" कहा गया है, जो तर्कहीन और विरोधाभासी है।**
- **यह कथन उन लोगों की स्वतंत्रता और अधिकारों का सम्मान नहीं करता जो जिहाद में शामिल नहीं होना चाहते।**

निष्कर्ष:

यह आयत Vipratipatti के तत्व के अनुरूप नहीं है क्योंकि इसमें नैतिक और तार्किक अंतर्विरोध है।

आयत 50

अनुवाद:
"अगर तुम्हें कोई लाभ पहुँचता है, तो उन्हें बुरा लगता है। और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है, तो वे कहते हैं, 'हमने पहले ही अपना मामला ठीक कर लिया था,' और खुशी-खुशी लौट जाते हैं।"

Nyaya तत्व: Anumana (Inference)
विश्लेषण:

- **आयत में यह निष्कर्ष दिया गया है कि कुछ लोग केवल स्वार्थी हैं और दूसरों की परेशानियों पर खुशी महसूस करते हैं।**
- **Anumana के अनुसार, निष्कर्ष तर्क और अनुभव पर आधारित होना चाहिए।**
- **यह कथन किसी प्रमाण के बिना यह मान लेता है कि सभी "दूसरे" लोग स्वार्थी हैं।**
- **यह निष्कर्ष व्यक्तिगत पूर्वाग्रह और भेदभाव पर आधारित है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Anumana के तत्व पर खरा नहीं उतरती क्योंकि इसका निष्कर्ष तर्क और अनुभव पर आधारित नहीं है।

सारांश

आयत 46-50 में जिहाद में शामिल न होने वाले लोगों को दोषी और नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। ये आयतें Nyaya दर्शन के प्रमुख तत्वों (Pramana, Vyapti, Hetu, Vipratipatti, Anumana) के अनुरूप नहीं हैं।
इन आयतों का दृष्टिकोण तर्क और प्रमाण के बजाय पूर्वाग्रह और दोषारोपण पर आधारित है, जो मानव स्वतंत्रता और नैतिकता के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 51-55 (सूरह तौबा, 9:51-55) का विश्लेषण

आयत 51

अनुवाद:
"तुम कह दो कि हम पर कोई मुसीबत नहीं पड़ सकती सिवाय इसके, जो ख़ुदा ने हमारे लिए लिख दिया है। वही हमारा मालिक है, और ईमानदारों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- **इस आयत में यह दावा किया गया है कि सभी घटनाएँ ईश्वर की इच्छा और पहले से लिखी हुई तक़दीर के अनुसार होती हैं।**
- **Pramana के अनुसार, कोई भी ज्ञान या दावा तर्क और प्रमाण पर आधारित होना चाहिए।**
- **यह कथन अनुभवजन्य साक्ष्य या तर्क के बजाय मात्र विश्वास पर आधारित है।**
- **यह मनुष्य के कार्य और जिम्मेदारी को नजरअंदाज करता है, जो नैतिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से अनुचित है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि यह दावे को प्रमाणित करने के लिए तर्क या अनुभव प्रस्तुत नहीं करती।

आयत 52

अनुवाद:
"मुनाफिकों से कह दो कि हम तो फतेह या शहादत (दोनों में से) किसी एक भलाई के मुन्तजिर हैं, और तुम इस बात का इंतजार करो कि ईश्वर तुम्हें सज़ा देगा या हमारे हाथों से।"

Nyaya तत्व: Vipratipatti (Contradiction)
विश्लेषण:

- **इस आयत में मुनाफिकों को धमकी दी गई है कि उन्हें या तो ईश्वर द्वारा या इंसानों के हाथों सज़ा मिलेगी।**
- **Vipratipatti के अनुसार, किसी भी तर्क या कथन में विरोधाभास नहीं होना चाहिए।**
- **यहाँ कथन में विरोधाभास यह है कि यह ईश्वर के "दयालु" होने के दावे के विपरीत है।**
- **इसके अलावा, यह कथन हिंसा और प्रतिशोध को बढ़ावा देता है, जो नैतिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से गलत है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vipratipatti के सिद्धांत को तोड़ती है क्योंकि इसमें ईश्वर की दया और इंसानी हिंसा का विरोधाभास है।

आयत 53

अनुवाद:
"तुम कह दो कि चाहे ख़ुशी से खर्च करो या मजबूरी से, तुम्हारी ख़ैरात कभी स्वीकार नहीं की जाएगी क्योंकि तुम बदकार लोग हो।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- **आयत में यह दावा किया गया है कि मुनाफिकों की भलाई स्वीकार नहीं की जाएगी, चाहे वह खुशी से दी जाए या मजबूरी से।**
- **Vyapti के अनुसार, कारण और परिणाम के बीच एक स्पष्ट और तर्कसंगत संबंध होना चाहिए।**
- **यहाँ यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि उनके दान को अस्वीकार करने का नैतिक या तर्कसंगत आधार क्या है।**
- **यह कथन पक्षपातपूर्ण है और भेदभाव को बढ़ावा देता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के तत्व को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि इसमें कारण और परिणाम का तार्किक संबंध स्पष्ट नहीं है।

आयत 54

अनुवाद:
"उनकी ख़ैरात केवल इस कारण अस्वीकार की जाती है कि उन्होंने ईश्वर और उसके रसूल की अवज्ञा की, और वे नमाज़ भी केवल अलस के साथ पढ़ते हैं और खर्च भी बेदिल होकर करते हैं।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण:

- **इस आयत में दान अस्वीकार करने का कारण उनकी "अवज्ञा" और "बे-दिली" बताया गया है।**
- **Hetu के अनुसार, किसी दावे का कारण तर्कसंगत और प्रमाणित होना चाहिए।**
- **यह कथन ईश्वर की "न्यायप्रियता" के दावे के विपरीत है, क्योंकि यह दान के पीछे की भावना या जरूरत को नहीं देखता।**

- **यह कथन दया और परोपकार के मूलभूत सिद्धांतों के खिलाफ है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के तत्व को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि इसमें दान अस्वीकार करने का नैतिक या तर्कसंगत कारण नहीं दिया गया है।

आयत 55

अनुवाद:
"उनके माल और औलाद तुम्हें हैरान न करें। ईश्वर चाहता है कि उन्हें दुनिया में माल और औलाद के जरिए आजमाए और जब उनकी जानें निकलें, तो वे काफिर ही रहें।"

Nyaya तत्व: Anumana (Inference)
विश्लेषण:

- **इस आयत में दावा किया गया है कि माल और औलाद केवल "आज़माने" के लिए दिए गए हैं।**
- **Anumana के अनुसार, निष्कर्ष तर्क और अनुभव पर आधारित होना चाहिए।**
- **यह कथन अनुचित पूर्वधारणा पर आधारित है कि सभी "मालदार" या "औलाद वाले" लोग आज़माइश में हैं।**
- **यह दृष्टिकोण ईश्वर की "दयालुता" और "न्यायप्रियता" के दावे के विपरीत है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Anumana के तत्व को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि यह तर्क और अनुभव के बिना निष्कर्ष निकालती है।

सारांश

आयत 51-55 में मुनाफिकों को धमकियाँ दी गई हैं और उन्हें नकारात्मक रूप में चित्रित किया गया है। इन आयतों में Nyaya दर्शन के प्रमुख तत्वों (Pramana, Vipratipatti, Vyapti, Hetu, Anumana) का पालन नहीं किया गया है।
इन आयतों का दृष्टिकोण तर्क और प्रमाण के बजाय पूर्वाग्रह और पक्षपात पर आधारित है। यह मानवता और नैतिकता के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है।

आयत 56-60 (सूरह तौबा, 9:56-60) का विश्लेषण

आयत 56

अनुवाद:
 "ये लोग ख़ुदा की क़सम खाएंगे कि वे तुममें से ही हैं, जबकि वे तुममें से नहीं हैं, बल्कि वे डरे हुए लोग हैं।"

Nyaya तत्व: Vipratipatti (Contradiction)
 विश्लेषण:

- **इस आयत में एक समुदाय को "डरपोक" और "झूठे" के रूप में चित्रित किया गया है।**
- **Vipratipatti के अनुसार, तर्क और विचारधारा में विरोधाभास नहीं होना चाहिए।**
- **आयत के अनुसार, ये लोग "ख़ुदा की क़सम" खाकर झूठ बोल रहे हैं, लेकिन यह दावे का समर्थन करने के लिए कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत करती।**
- **किसी समूह को बिना प्रमाण के अपमानजनक नामों से बुलाना नैतिकता और तर्कसंगतता के विपरीत है।**

निष्कर्ष:
 यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना दावे करती है, जो Vipratipatti के सिद्धांत का उल्लंघन है।

आयत 57

अनुवाद:
 "यदि उन्हें पनाह की कोई जगह मिले, तो वे रस्सियाँ तोड़कर उसी की ओर भाग जाएंगे।"

Nyaya तत्व: Anumana (Inference)
 विश्लेषण:

- **यहाँ यह दावा किया गया है कि ये लोग भागने के अवसर की तलाश में रहते हैं।**
- **Anumana के अनुसार, निष्कर्ष तर्क और अनुभव पर आधारित होना चाहिए।**
- **यह कथन एक पूर्वधारणा पर आधारित है और यह दावा बिना किसी साक्ष्य या तर्क के किया गया है।**
- **बिना किसी ठोस प्रमाण के किसी व्यक्ति या समूह के इरादों को गलत ठहराना नैतिक दृष्टिकोण से अनुचित है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Anumana के तत्व को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि यह तर्क और प्रमाण के बिना निष्कर्ष निकालती है।

आयत 58

अनुवाद:
"कुछ लोग तुम्हें ख़ैरात की तक़सीम में इल्ज़ाम देते हैं। यदि उन्हें कुछ दिया जाए तो वे खुश हो जाते हैं, और यदि नहीं, तो वे तुरंत बिगड़ जाते हैं।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- आयत में यह आरोप लगाया गया है कि लोग ख़ैरात की तक़सीम में पक्षपात का आरोप लगाते हैं।
- Pramana के अनुसार, दावे को वैध और प्रमाणित ज्ञान पर आधारित होना चाहिए।
- यह कथन केवल एक निष्कर्ष है और यह स्पष्ट नहीं करता कि ऐसा आरोप किस आधार पर लगाया गया है।
- बिना प्रमाण के इस प्रकार के आरोप लगाने से समाज में असहमति और भेदभाव को बढ़ावा मिल सकता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के तत्व को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि यह वैध और प्रमाणित ज्ञान पर आधारित नहीं है।

आयत 59

अनुवाद:
"यदि वे ख़ुदा और उसके रसूल द्वारा दी गई चीज़ों पर संतुष्ट रहते और कहते कि ख़ुदा हमारे लिए पर्याप्त है, तो यह उनके लिए बेहतर होता।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण:

- आयत में सुझाव दिया गया है कि असंतोष के बजाय ईश्वर पर भरोसा करना बेहतर है।
- Hetu के अनुसार, किसी दावे का कारण स्पष्ट और तर्कसंगत होना चाहिए।
- यह कथन विश्वास पर आधारित है और इसमें असंतोष का कारण या समाधान नहीं दिया गया है।
- यह लोगों की वास्तविक समस्याओं को अनदेखा करते हुए उन्हें केवल ईश्वर पर निर्भर रहने का परामर्श देता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के तत्व को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि इसमें असंतोष के कारणों को संबोधित नहीं किया गया है।

आयत 60

अनुवाद:
"ख़ैरात केवल फकीरों, मोहताजों, ज़कात के काम करने वालों, और जिनके दिलों को तालीफ (प्रेरित) किया गया हो, उनकी मदद के लिए है।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- आयत में बताया गया है कि ख़ैरात के हक़दार कौन-कौन हैं।
- Vyapti के अनुसार, कारण और परिणाम का तार्किक संबंध होना चाहिए।
- यह वर्गीकरण सीमित और पक्षपातपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि इसमें सभी ज़रूरतमंदों को शामिल नहीं किया गया है।
- उदाहरण के लिए, इसमें अन्य धर्मों या समुदायों के जरूरतमंद लोगों का उल्लेख नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि यह ख़ैरात के हक़दारों की सूची को अनावश्यक रूप से सीमित करती है।

सारांश

आयत 56-60 में तर्क, नैतिकता और समावेशिता की कमी है। ये आयतें Nyaya दर्शन के प्रमुख तत्वों (Vipratipatti, Anumana, Pramana, Hetu, Vyapti) को संतुष्ट नहीं करतीं।

1. **इन आयतों में बिना प्रमाण के आरोप लगाए गए हैं।**
2. **पक्षपात और भेदभाव को बढ़ावा दिया गया है।**
3. **वास्तविक समस्याओं का समाधान प्रदान करने के बजाय ईश्वर पर निर्भरता की सलाह दी गई है।**
4. **ख़ैरात का दायरा सीमित और पक्षपातपूर्ण है।**

इन आयतों का दृष्टिकोण तर्क और मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों के साथ मेल नहीं खाता।

आयत 61-65 (सूरह तौबा, 9:61-65) का विश्लेषण

आयत 61

अनुवाद:
"कुछ लोग रसूल को सताते हैं और कहते हैं कि यह केवल कान (सुनने वाला) है। तुम कह दो कि यह तुम्हारी भलाई सुनने के लिए है, क्योंकि यह ईश्वर पर विश्वास करता है और मोमिनीन की बातों को मानता है। जो लोग रसूल को सताते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- **आयत में दावा किया गया है कि जो लोग "रसूल को सताते हैं," उनके लिए "दर्दनाक अज़ाब" है।**
- **Pramana के अनुसार, किसी दावे को वैध और प्रमाणित ज्ञान पर आधारित होना चाहिए।**
- **यहाँ "सताने" का अर्थ अस्पष्ट है। यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि इस शब्द के तहत कौन-सी कार्रवाई आती है।**
- **"दर्दनाक अज़ाब" जैसे परिणाम के लिए पर्याप्त तर्क और प्रमाण नहीं दिए गए हैं।**
- **यह आयत एक न्यायपूर्ण दृष्टिकोण के बजाय धमकी और दंडात्मक स्वभाव को बढ़ावा देती है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि इसमें दावे को प्रमाणित करने के लिए तार्किक आधार नहीं है।

आयत 62

अनुवादः
"ये लोग तुम्हारे सामने ख़ुदा की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी कर लें। यदि ये सच्चे ईमानदार होते तो ख़ुदा और उसके रसूल को राज़ी करने की कोशिश करते।"

Nyaya तत्व: Anumana (Inference)
विश्लेषण:

- आयत में कहा गया है कि लोग केवल दिखावे के लिए कसम खाते हैं।
- Anumana के अनुसार, निष्कर्ष तर्क और अनुभव पर आधारित होना चाहिए।
- यहाँ कथन एक सामान्यीकरण पर आधारित है, जो सभी लोगों की भावनाओं और इरादों को एक ही श्रेणी में रखता है।
- लोगों की नीयत या विश्वास को बिना प्रमाण के आंकना तर्कसंगत नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Anumana के तत्व का उल्लंघन करती है क्योंकि यह सामान्यीकरण और व्यक्तिगत नीयत का अनुचित आकलन करती है।

आयत 63

अनुवादः
"क्या ये लोग नहीं जानते कि जिसने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालेफ़त की, उसके लिए जहन्नुम की आग है, जिसमें वह हमेशा रहेगा? यही तो सबसे बड़ी रूसवाई है।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण:

- आयत में "मुख़ालेफ़त" (विरोध) के परिणामस्वरूप "जहन्नुम" का दंड बताया गया है।
- Hetu के अनुसार, कारण और परिणाम का तार्किक संबंध होना चाहिए।
- "मुख़ालेफ़त" का क्या मतलब है, यह स्पष्ट नहीं है। क्या यह आलोचना है, असहमति है, या कोई अन्य कार्य है?
- "जहन्नुम" जैसा गंभीर दंड देने के लिए कोई तर्कसंगत आधार नहीं दिया गया है।
- यह दंडात्मक दृष्टिकोण स्वतंत्र विचार और आलोचना की भावना के खिलाफ है।

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि यह कारण और परिणाम के बीच तार्किक संबंध स्थापित नहीं करती।

आयत 64

अनुवाद:
"मुनाफ़िक़ डरते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि कोई सूरा नाज़िल हो जाए जो उनके दिल की बातों को प्रकट कर दे। तुम कह दो कि जो तुम छिपा रहे हो, ख़ुदा उसे ज़रूर ज़ाहिर करेगा।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- **आयत में "मुनाफ़िक़" के डर और उनके छिपे हुए इरादों को प्रकट करने की बात की गई है।**
- **Vyapti के अनुसार, किसी दावे और उसके प्रमाण के बीच तार्किक संगति होनी चाहिए।**
- **यहाँ यह दावा किया गया है कि ईश्वर उनके गुप्त इरादों को प्रकट करेगा, लेकिन यह कैसे होगा, इसका कोई स्पष्ट विवरण नहीं है।**
- **किसी के "डर" और "इरादों" का आकलन तर्क के बिना करना अनुचित है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के तत्व को संतुष्ट नहीं करती क्योंकि यह दावा और प्रमाण के बीच तार्किक संगति स्थापित नहीं करती।

आयत 65

अनुवाद:
"यदि तुम उनसे पूछो तो वे कहेंगे कि हम तो सिर्फ़ दिल्लगी कर रहे थे। तुम कह दो कि क्या तुम ख़ुदा, उसकी आयतों और उसके रसूल से हंसी कर रहे थे?"

Nyaya तत्व: Vipratipatti (Contradiction)
विश्लेषण:

- आयत में लोगों की "दिल्लगी" को ईश्वर, आयतों, और रसूल के प्रति अनादर के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- **Vipratipatti** के अनुसार, तर्क में विरोधाभास नहीं होना चाहिए।
- "दिल्लगी" और "हंसी" जैसे कार्यों को गंभीर दंड के योग्य बताना तर्कसंगत दृष्टिकोण के खिलाफ है।
- यह कथन असहमति और विचारों की विविधता को अस्वीकार करता है।

निष्कर्ष:
यह आयत **Vipratipatti** के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह तर्क और नैतिकता के बीच असंगति उत्पन्न करती है।

सारांश

आयत 61-65 में तर्क, नैतिकता और मानवता के सार्वभौमिक सिद्धांतों की कमी है।

1. इन आयतों में दंडात्मक दृष्टिकोण और धमकी की भावना है।
2. तर्क और प्रमाण के बिना आरोप और दंड तय किए गए हैं।
3. स्वतंत्र विचार और आलोचना की भावना को दबाने की प्रवृत्ति है।
4. "मुनाफ़िक़" और "मुख़ालेफ़त" जैसे शब्दों का उपयोग समूह विशेष के प्रति पूर्वाग्रह को बढ़ावा देता है।

इन आयतों का दृष्टिकोण Nyaya दर्शन के तत्वों (Pramana, Anumana, Hetu, Vyapti, Vipratipatti) के अनुरूप नहीं है और यह तर्कसंगतता तथा मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों से भिन्न है।

आयत 66-70 (सूरह तौबा, 9:66-70) का विश्लेषण

आयत 66

अनुवाद:
"अब बातें न बनाओ। हक़ तो यह है कि तुम ईमान लाने के बाद काफिर हो गए। अगर हम तुममें से कुछ लोगों को माफ भी कर दें, तो भी कुछ लोगों को ज़रूर सज़ा देंगे, क्योंकि वे गुनाहगार हैं।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण:

- आयत में कहा गया है कि "ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए," और इसके लिए सज़ा दी जाएगी।
- Hetu के अनुसार, किसी दंड का औचित्य तर्कसंगत कारणों पर आधारित होना चाहिए।
- यहाँ "काफ़िर" होने का तात्पर्य क्या है, इसे स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है।
- यह आयत एक सामान्यीकरण करती है और "गुनाह" को मापने का कोई तार्किक या नैतिक आधार प्रस्तुत नहीं करती।

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि यहाँ दंड के लिए तर्कसंगत और प्रमाणित कारणों की कमी है।

आयत 67

अनुवाद:
"मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरतें एक-दूसरे के समान हैं। वे बुरे काम करने का हुक्म देते हैं, अच्छे कामों से रोकते हैं, और ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च नहीं करते। ये लोग ख़ुदा को भूल गए, तो ख़ुदा ने भी इन्हें भुला दिया। निस्संदेह, मुनाफिक बदचलन हैं।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- आयत में "मुनाफिक" मर्द और औरतों को बुराई और बदचलनी के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है।
- Vyapti के अनुसार, किसी दावे और उसके प्रमाण के बीच अपरिहार्य संगति होनी चाहिए।
- आयत में बिना किसी साक्ष्य के यह दावा किया गया है कि "मुनाफिक" अच्छे कार्यों से रोकते हैं और बुराई का आदेश देते हैं।
- "ख़ुदा को भूलने" और "ख़ुदा द्वारा भुला दिए जाने" का तर्क नैतिक और तार्किक दृष्टिकोण से असंतोषजनक है।

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि यह तार्किक और नैतिक संगति की कमी दिखाती है।

आयत 68

अनुवादः
"मुनाफिक मर्दों और औरतों और काफिरों से ख़ुदा ने जहन्नुम की आग का वादा किया है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे। यही उनके लिए पर्याप्त है। ख़ुदा ने उन पर लानत की है और उनके लिए हमेशा रहने वाला अज़ाब है। "

Nyaya तत्वः Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषणः

- आयत में "जहन्नुम की आग" और "हमेशा रहने वाले अज़ाब" का उल्लेख है।
- Pramana के अनुसार, किसी दावे को प्रमाणित ज्ञान और अनुभव पर आधारित होना चाहिए।
- यहाँ दंड के स्वरूप और उसकी अनंतता को प्रमाणित करने के लिए कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।
- यह आयत भय और धमकी पर आधारित है, जो न्याय और तर्कसंगतता के विरुद्ध है।

निष्कर्षः
यह आयत Pramana के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि इसमें दावे के समर्थन में कोई वैध प्रमाण नहीं है।

आयत 69

अनुवादः
"उनकी मसल उन लोगों जैसी है जो तुमसे पहले थे। वे शक्ति और संतान में तुमसे अधिक थे। उन्होंने अपने हिस्से का आनंद उठाया, जैसे तुमने उठाया, और वे बुराई में घुसे रहे, जैसे तुम घुसे। उनका किया-धरा दुनिया और आख़िरत में अकारथ हुआ, और यही लोग घाटे में हैं। "

Nyaya तत्वः Anumana (Inference)
विश्लेषणः

- आयत में वर्तमान मुनाफिकों की तुलना पिछली जातियों (जैसे नूह, आद, और समूद की कौमें) से की गई है।
- Anumana के अनुसार, निष्कर्ष तर्क और प्रमाण पर आधारित होना चाहिए।
- यहाँ बुराई में लिप्त होने और परिणामस्वरूप नुक़सान होने का दावा किया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि "बुराई" का दायरा क्या है।

- **आयत का सामान्यीकरण तर्कसंगतता और न्यायसंगतता के सिद्धांतों के विपरीत है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Anumana के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना सटीक प्रमाण के निष्कर्ष पर पहुँचती है।

आयत 70

अनुवाद:
"क्या इन मुनाफिकों को उन लोगों की खबर नहीं पहुँची, जो उनसे पहले गुजर चुके हैं, जैसे नूह की कौम, आद, समूद, इब्राहीम की कौम, मदियन वाले, और उलटी हुई बस्तियों के निवासी? उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चमत्कार लेकर आए, तो वे अज़ाब के पात्र बने। ख़ुदा ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया।"

Nyaya तत्व: Vipratipatti (Contradiction)
विश्लेषण:

- **आयत में यह कहा गया है कि पुराने समुदायों ने अपने रसूलों की बात नहीं मानी और "अज़ाब" के पात्र बने।**
- **Vipratipatti के अनुसार, तर्क में विरोधाभास नहीं होना चाहिए।**
- **यह दावा किया गया है कि "ख़ुदा ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया," लेकिन उनके विनाश का श्रेय "ख़ुदा के अज़ाब" को दिया गया है।**
- **यह कथन नैतिकता और न्याय के सार्वभौमिक सिद्धांतों के साथ असंगत है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vipratipatti के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें तर्क और नैतिकता के बीच विरोधाभास है।

सारांश

आयत 66-70 का विश्लेषण Nyaya दर्शन के तत्वों (Hetu, Vyapti, Pramana, Anumana, Vipratipatti) के अनुसार किया गया।

1. **इन आयतों में तर्क, प्रमाण, और नैतिकता की कमी है।**
2. **"मुनाफिक" और "काफ़िर" जैसे शब्दों का उपयोग विभाजनकारी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।**
3. **भय, धमकी, और दंडात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग स्वतंत्र विचार और मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों के विपरीत है।**
4. **आयतों में दावे करने के लिए तर्कसंगत आधार प्रस्तुत नहीं किए गए हैं।**

यह आयतें Nyaya दर्शन के तर्क और मानवता के सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों से असंगत हैं।

आयत 71-75 (सूरह तौबा, 9:71-75) का विश्लेषण

आयत 71

अनुवादः
"और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें एक-दूसरे के रफीक़ हैं। वे नमाज़ पाबंदी से पढ़ते हैं, ज़कात देते हैं, और ख़ुदा और उसके रसूल की फरमाबरदारी करते हैं। यही लोग हैं जिन पर ख़ुदा अनक़रीब रहम करेगा। निस्संदेह, ख़ुदा ग़ालिब और हिकमत वाला है।"

Nyaya तत्व: Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

- **इस आयत में "ईमानदार मर्द और औरतों" को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
- **Pramana के अनुसार, किसी दावे को प्रमाणित ज्ञान या अनुभव पर आधारित होना चाहिए।**
- **यहाँ "नमाज़ पढ़ने" और "ज़कात देने" को "रहमत" प्राप्त करने का आधार बताया गया है, लेकिन इसका कोई तार्किक या प्रमाणित आधार प्रस्तुत नहीं किया गया है।**
- **इसके अलावा, "रसूल की फरमाबरदारी" के बिना किसी स्पष्ट तर्क के "रहमत" के लिए आवश्यक शर्त बना दी गई है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि इसमें दावे के लिए तार्किक प्रमाण या अनुभवजन्य साक्ष्य की कमी है।

आयत 72

अनुवाद:

"ख़ुदा ने ईमानदार मर्दों और औरतों से उन बागों का वायदा किया है, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, और वे उनमें हमेशा रहेंगे। इसके साथ ही अदन के बाग़ों में ऊँचे मकानात का भी वादा किया गया है। और ख़ुदा की ख़ुशनूदी इससे भी बढ़कर है। यही बड़ी कामयाबी है।"

Nyaya तत्व: Upamana (Comparison)

विश्लेषण:

- **आयत में जन्नत के "बाग़ों" और "ऊँचे मकानात" का वादा किया गया है।**
- **Upamana के अनुसार, किसी तुलना का आधार स्पष्ट और तार्किक होना चाहिए।**
- **यहाँ "जन्नत" को भौतिक सुखों (बाग़, नहरें, मकान) से जोड़ा गया है, जो आध्यात्मिकता और नैतिकता के सिद्धांतों के विपरीत है।**
- **"ख़ुदा की ख़ुशनूदी" को "बड़ी कामयाबी" बताया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि यह किस प्रकार से मानवता के नैतिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण के अनुकूल है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Upamana के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि इसमें तुलना का आधार स्पष्ट और तार्किक नहीं है।

आयत 73

अनुवाद:

"ऐ रसूल, कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िकों के साथ जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो। उनका ठिकाना जहन्नुम है, और वह बहुत बुरी जगह है।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आयत में "जिहाद" और "सख़्ती" का आदेश दिया गया है।**
- **Hetu के अनुसार, किसी क्रिया का औचित्य तर्कसंगत और नैतिक कारणों पर आधारित होना चाहिए।**
- **यहाँ "कुफ़्फ़ार" और "मुनाफ़िकों" के खिलाफ जिहाद का आदेश बिना किसी स्पष्ट और न्यायसंगत कारण के दिया गया है।**

- "जहन्नुम" की सज़ा का उल्लेख डर और हिंसा के आधार पर किया गया है, जो तर्क और मानवता के सिद्धांतों के विपरीत है।

निष्कर्ष:
यह आयत **Hetu** के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि इसमें दिए गए आदेशों का तर्कसंगत आधार स्पष्ट नहीं है।

आयत 74

अनुवाद:
"ये मुनाफिक़ ख़ुदा की क़समें खाते हैं कि उन्होंने कुछ नहीं कहा, जबकि उन्होंने कुफ्र का कलमा कहा और इस्लाम के बाद काफ़िर हो गए। उन्होंने वह करने की ठानी, जो वे नहीं कर सकते थे। उन्होंने सिर्फ इस वजह से दुश्मनी की कि ख़ुदा और उसके रसूल ने अपने फज़्ल से उन्हें दौलतमंद बना दिया। अगर वे तौबा कर लें तो उनके लिए बेहतर होगा। लेकिन अगर वे न मानें, तो ख़ुदा उन्हें दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा देगा। और उनके लिए कोई मददगार न होगा।"

Nyaya तत्व: Anumana (Inference)
विश्लेषण:

- आयत में "मुनाफ़िकों" पर "दुश्मनी" और "कुफ्र" का आरोप लगाया गया है।
- **Anumana** के अनुसार, किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए प्रमाणित तर्क और साक्ष्य होना चाहिए।
- यहाँ "कुफ्र का कलमा कहने" का दावा किया गया है, लेकिन इसे साबित करने के लिए कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।
- "तौबा" करने और "दर्दनाक सज़ा" का उल्लेख भय और धमकी की भावना को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष:
यह आयत **Anumana** के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि निष्कर्ष तर्क और साक्ष्य पर आधारित नहीं है।

आयत 75

अनुवाद:
 "और इनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने ख़ुदा से वादा किया था कि अगर वह हमें अपने फज़ल से माल देगा, तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और नेक बनेंगे।"

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
 विश्लेषण:

- **आयत में "ख़ुदा से वादा" करने और "नेक बनने" का दावा किया गया है।**
- **Prameya के अनुसार, ज्ञान का उद्देश्य स्पष्ट और तर्कसंगत होना चाहिए।**
- **यहाँ "वादा" और "नेक बनने" के संबंध में कोई प्रमाण या उद्देश्य स्पष्ट नहीं किया गया है।**
- **यह आयत व्यक्तिगत वादों और धार्मिक आदेशों के माध्यम से नैतिकता को बाध्यकारी बनाने का प्रयास करती है।**

निष्कर्ष:
 यह आयत Prameya के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि ज्ञान का उद्देश्य और उद्देश्य की तर्कसंगतता अस्पष्ट है।

सारांश

आयत 71-75 का विश्लेषण Nyaya दर्शन के तत्वों (Pramana, Upamana, Hetu, Anumana, Prameya) के आधार पर किया गया।

1. **इन आयतों में तर्कसंगतता, प्रमाण, और नैतिकता की कमी है।**
2. **"जिहाद" और "सख़्ती" जैसे आदेश हिंसा और भय को बढ़ावा देते हैं।**
3. **"दुनिया और आख़िरत" में सज़ा का उल्लेख भय पैदा करने के उद्देश्य से किया गया है।**
4. **आयतों में मानवता के नैतिक और तर्कसंगत मूल्यों का अभाव है।**

यह आयतें Nyaya दर्शन के सिद्धांतों और सार्वभौमिक मानव मूल्यों से असंगत हैं।

आयत 76-80 (सूरह तौबा, 9:76-80) का विश्लेषण

आयत 76

अनुवादः
"तो जब ख़ुदा ने अपने फज़्ल (करम) से उन्हें अता किया, तो वे उसमें बुख़्ल करने लगे और (वायदा पूरा करने से) कतराकर मुँह फेरने लगे।"

Nyaya तत्व: Pratyaksha (Perception)
विश्लेषण:

- **आयत में इस बात का दावा किया गया है कि ईश्वर ने उन्हें "फज़्ल" अता किया, लेकिन उन्होंने वायदा पूरा नहीं किया और "बुख़्ल" किया।**
- **Pratyaksha के अनुसार, जो चीज़ प्रत्यक्ष अनुभव या साक्ष्य से सिद्ध हो, वही मान्य है।**
- **यहाँ "फज़्ल" और "बुख़्ल" के दावे को प्रमाणित करने के लिए कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य या अनुभव प्रस्तुत नहीं किया गया है।**
- **दावे का आधार केवल विश्वास और ईश्वरीय कथन पर आधारित है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Pratyaksha के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि दावे के लिए प्रत्यक्ष अनुभव या प्रमाण मौजूद नहीं है।

आयत 77

अनुवादः
"फिर उनकी इस हरकत के बदले में ख़ुदा ने उनके दिलों में निफ़ाक़ (द्वेष) डाल दिया, जो क़यामत तक बना रहेगा, क्योंकि उन्होंने अपने वायदे के खिलाफ़ किया और झूठ बोला।"

Nyaya तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

- **आयत में यह दावा किया गया है कि वायदा तोड़ने और झूठ बोलने के कारण उनके दिलों में "निफ़ाक़" डाल दिया गया।**
- **Vyapti के अनुसार, कारण और प्रभाव के बीच अटूट संबंध होना चाहिए।**
- **यहाँ "वायदा तोड़ना" और "निफ़ाक़" के बीच का संबंध केवल कथन पर आधारित है, इसके लिए कोई तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।**
- **इसके अलावा, यह दावा भी है कि "निफ़ाक़" क़यामत तक बना रहेगा, जो संभाव्यता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तर्कहीन है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Vyapti के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि कारण और प्रभाव के बीच संबंध का तर्कसंगत आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।

आयत 78

अनुवाद:

"क्या वे नहीं जानते कि ख़ुदा उनके सारे भेद और उनकी सरगोशी जानता है और वह ग़ैब की बातों से ख़ूब आगाह है?"

Nyaya तत्व: Anumana (Inference)

विश्लेषण:

- **आयत में यह दावा किया गया है कि ईश्वर हर भेद और गुप्त बातें जानता है।**
- **Anumana के अनुसार, निष्कर्ष को तर्क और प्रमाण के आधार पर सिद्ध करना आवश्यक है।**
- **यहाँ "ग़ैब की बातें जानने" का दावा प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण नहीं दिया गया।**
- **यह दावा केवल आस्था और विश्वास पर आधारित है, जो तर्कसंगत निष्कर्ष नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Anumana के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि निष्कर्ष तर्क और प्रमाण पर आधारित नहीं है।

आयत 79

अनुवाद:

"जो लोग दिल खोलकर ख़ैरात करने वाले मोमिनों और मेहनत से अपनी रोज़ी कमाने वालों पर इल्ज़ाम लगाते हैं और उनका मज़ाक उड़ाते हैं, तो ख़ुदा भी उनसे मज़ाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है।"

Nyaya तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आयत में यह दावा किया गया है कि ख़ैरात करने वालों का मज़ाक उड़ाने वालों को ईश्वर दंड देगा।**

- **Hetu के अनुसार, किसी दंड या क्रिया के लिए तार्किक कारण होना चाहिए।**
- **यहाँ "मज़ाक उड़ाने" और "दर्दनाक सज़ा" के बीच कोई तार्किक संबंध स्थापित नहीं किया गया है।**
- **इसके अलावा, "ख़ुदा भी उनसे मज़ाक करेगा" जैसे कथन नैतिकता और न्याय के सार्वभौमिक मानकों का उल्लंघन करते हैं।**

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि दंड और कारण का तर्कसंगत आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।

आयत 80

अनुवाद:
"चाहे तुम उनके लिए मग़फिरत की दुआ मांगो या न मांगो, अगर तुम सत्तर बार भी दुआ मांगोगे, तो भी ख़ुदा उन्हें कभी माफ़ नहीं करेगा। यह इसलिए है कि उन्होंने ख़ुदा और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और ख़ुदा बदकार लोगों को मंज़िल तक नहीं पहुँचाता। "

Nyaya तत्व: Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:

- **आयत में यह दावा किया गया है कि "कुफ़्र" करने वालों को माफ़ नहीं किया जाएगा।**
- **Prameya के अनुसार, ज्ञान और निर्णय का उद्देश्य स्पष्ट और तार्किक होना चाहिए।**
- **यहाँ "कुफ़्र" और "माफी न देने" का संबंध स्थापित किया गया है, लेकिन "कुफ़्र" का कोई सार्वभौमिक और तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।**
- **"सत्तर बार दुआ मांगने" का उल्लेख अतार्किक और अतिरेकपूर्ण प्रतीत होता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Prameya के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि निर्णय का उद्देश्य अस्पष्ट और तर्कहीन है।

सारांश

आयत 76-80 का विश्लेषण Nyaya दर्शन के तत्वों (Pratyaksha, Vyapti, Anumana, Hetu, Prameya) के आधार पर किया गया।

1. **"ईश्वर का फज़ल" और "बुख़्ल" जैसे दावे प्रत्यक्ष प्रमाण और अनुभव से सिद्ध नहीं हैं।**
2. **"निफ़ाक़" और "वायदा तोड़ने" के बीच संबंध का कोई तार्किक आधार नहीं है।**
3. **"ग़ैब की बातें जानने" और "दर्दनाक सज़ा" जैसे दावे केवल विश्वास पर आधारित हैं।**
4. **"सत्तर बार दुआ मांगने" का उल्लेख अतार्किक और मानवता के नैतिक मानकों के विपरीत है।**

यह आयतें Nyaya दर्शन के सिद्धांतों और सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों के साथ असंगत हैं।

आयत 81 (सूरए तौबा, 9:81)
अनुवाद: "जंगे तबूक़ में रसूले ख़ुदा के पीछे रह जाने वाले अपनी जगह बैठ रहने (और जिहाद में न जाने) से ख़ुश हुए और अपने माल और आपनी जानों से ख़ुदा की राह में जिहाद करना उनको मकरू मालूम हुआ और कहने लगे (इस) गर्मी में (घर से) न निकलो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि जहन्नुम की आग (जिसमें तुम चलोगे उससे कहीं ज़्यादा गर्म है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषण:
इस आयत में जिहाद में भाग न लेने के लिए बहाने दिए गए हैं। मुनाफ़िक़ीन ने कहा कि गर्मी के मौसम में जिहाद पर जाना कठिन है। यह वाक्य केवल मनोवैज्ञानिक और शारीरिक कारणों को बताता है, लेकिन इससे जुड़ा कोई धार्मिक या आध्यात्मिक कारण प्रस्तुत नहीं किया गया। "Hetu" (कारण) के दृष्टिकोण से, यदि कोई कार्य महत्वपूर्ण है, तो उसका कारण सिर्फ व्यक्तिगत तकलीफों या स्थिति पर आधारित नहीं हो सकता। जिहाद का उद्देश्य धार्मिक विश्वास, समाज में सुधार और मानवता की भलाई है, लेकिन इस आयत में इसके वास्तविक उद्देश्य को खारिज कर दिया गया है और केवल भौतिक कारणों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जिहाद के महत्व के लिए कोई आध्यात्मिक या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है। यह केवल भौतिक कठिनाइयों का हवाला देती है, जो इस कार्य के वास्तविक उद्देश्य से मेल नहीं खातीं।

आयत 82 (सूरए तौबा, 9:82)
अनुवाद: "अगर वह कुछ समझें जो कुछ वह किया करते थे उसके बदले उन्हें चाहिए कि वह बहुत कम हँसें और बहुत रोएँ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:
इस आयत में मुसलमानों को अपने कार्यों के लिए पश्चाताप करने की सलाह दी गई है। "Prameya" (ज्ञान का विषय) के दृष्टिकोण से, यह आयत केवल एक भावनात्मक प्रतिक्रिया को परिभाषित करती है, जैसे हंसी और रोने का अनुपात, लेकिन इसके पीछे कोई तात्त्विक या व्यवहारिक तर्क नहीं दिया गया। पश्चाताप के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन या किसी नैतिक सिद्धांत का उल्लेख नहीं है, जो कि एक धार्मिक अनुशासन के लिए अनिवार्य होता।

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें पश्चाताप के वास्तविक और व्यवहारिक सिद्धांत का अभाव है।

आयत 83 (सूरए तौबा, 9:83)
अनुवाद: "तो (ऐ रसूल) अगर ख़ुदा तुम इन मुनाफेक़ीन के किसी गिरोह की तरफ (जिहाद से सहीसालिम) वापस लाए फिर तुमसे (जिहाद के वास्ते) निकलने की इजाज़त माँगें तो तुम साफ़ कह दो कि तुम मेरे साथ (जिहाद के वास्ते) हरगिज़ न निकलने पाओगे और न हरगिज़ दुश्मन से मेरे साथ लड़ने पाओगे जब तुमने पहली मरतबा (घर में) बैठे रहना पसन्द किया तो (अब भी) पीछे रह जाने वालों के साथ (घर में) बैठे रहो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:
इस आयत में मुनाफ़िक़ीन के लिए एक स्पष्ट संदेश दिया गया है कि वे कभी भी जिहाद में भाग नहीं ले पाएंगे, यदि उन्होंने पहले भाग लेने का अवसर गंवा दिया है। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का परिणाम हमेशा एक निश्चित नियम के अनुसार होना चाहिए। यहाँ पर इसका कोई स्पष्ट और निरंतर संबंध नहीं है, क्योंकि यह निर्णय पहले के कार्यों पर आधारित है, लेकिन आगे की स्थिति के लिए कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं दिया गया।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें पहले के कार्यों और भविष्य के परिणामों के बीच कोई निश्चित संबंध स्थापित नहीं किया गया है।

आयत 84 (सूरए तौबा, 9:84)
अनुवाद: "और उन मुनाफिक़ीन में से जो मर जाए तो कभी ना किसी पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर (जाकर) खड़े होना। इन लोगों ने यक़ीनन ख़ुदा और उसके रसूल के साथ कुफ्ऱ किया और बदकारी की हालत में मर (भी) गए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषण:
यह आयत मुनाफ़िक़ीन के लिए एक दंड के रूप में प्रस्तुत की गई है। इसके अनुसार, जिन लोगों ने कुफ्ऱ (अविश्वास) किया और बदकारी की स्थिति में मरे, उनके लिए नमाज़े जनाज़ा और क़ब्र पर खड़ा होना मना किया गया है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत से यह विश्लेषण किया जा सकता है कि यदि किसी व्यक्ति के दुष्कर्मों के कारण दंड दिया जाता है, तो वह दंड उसी दुष्कर्म के कारण होना चाहिए। लेकिन इस आयत में दंड का कारण बिना स्पष्ट कारण या प्रमाण के दिया गया है, जिससे यह संदेहास्पद हो जाता है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी दंड का स्पष्ट कारण या प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 85 (सूरए तौबा, 9:85)
अनुवाद: "और उनके माल और उनकी औलाद (की कसरत) तुम्हें ताज्जुब (हैरत) मने डाले (क्योंकि) ख़ुदा तो बस ये चाहता है कि दुनिया में भी उनके माल और औलाद की बदौलत उनको अज़ाब में मुब्तिला करे और उनकी जान निकालने लगे तो उस वक़्त भी ये काफ़िर (के काफ़िर ही) रहें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:
इस आयत में यह दावा किया गया है कि मुनाफ़िक़ीन के माल और औलाद की कसरत उनके लिए अज़ाब का कारण बनेगी। Nyaya दर्शन के "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत से, यह दावा केवल विश्वास और धार्मिक विचारों पर आधारित है, जिसमें कोई ठोस वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है।

सारांश:
इन आयतों में जो संदेश दिए गए हैं, वे तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं हैं और Nyaya दर्शन के तत्वों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में दिए गए दंड, पुरस्कार और धार्मिक आदेशों के लिए कोई स्पष्ट प्रमाण या तात्त्विक कारण नहीं है, जिससे ये आयतें प्रमाणिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक हो जाती हैं।

आयत 86-90 (सूरए तौबा, 9:86-90)

आयत 86 (सूरए तौबा, 9:86)

अनुवाद: "और जब कोई सूरा इस बारे में नाज़िल हुआ कि ख़ुदा को मानों और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो जो उनमें से दौलत वाले हैं वह तुमसे इजाज़त मांगते हैं और कहते हैं कि हमें (यहीं छोड़ दीजिए) कि हम भी (घर बैठने वालों के साथ) बैठें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में दौलत वाले लोग जिहाद में भाग लेने से बचने के लिए इजाज़त मांगते हैं और घर बैठने का आग्रह करते हैं। यहाँ पर, Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, इस प्रकार की इजाज़त देने का कोई स्पष्ट और तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है। यदि कोई कार्य धर्मनिरपेक्षता, न्याय, या समाज के भले के लिए किया जा रहा है, तो इसे धार्मिक या मानसिक कारणों से उपेक्षित नहीं किया जाना चाहिए।**
- **आयत में यह संदेश दिया गया है कि कुछ लोग समाज या समुदाय की भलाई में भाग लेने के बजाय केवल अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं में ही संतुष्ट रहते हैं, लेकिन यह तर्कसंगत कारणों की कमी को दर्शाता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जिहाद में भाग न लेने के कारण का कोई प्रमाणित और तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।

आयत 87 (सूरए तौबा, 9:87)

अनुवाद: "ये इस बात से ख़ुश हैं कि पीछे रह जाने वालों (औरतों, बच्चों, बीमारों के साथ बैठे) रहें और (गोया) उनके दिलों पर मोहर कर दी गई तो ये कुछ नहीं समझते।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह कहा गया है कि कुछ लोग सिर्फ़ आराम और सुविधा के कारण युद्ध से पीछे रहते हैं। वे उस कार्य के परिणामों को पूरी तरह से न समझ पाने के कारण इसका हिस्सा नहीं बनते। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कार्य का परिणाम तात्त्विक और अव्यक्त संबंध होना चाहिए, जो यहां स्पष्ट नहीं है।**
- **यह कहा गया है कि "इनके दिलों पर मोहर कर दी गई," लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक, दार्शनिक या प्रमाणिक आधार नहीं है कि किसी व्यक्ति का दिल या सोच बिना किसी वैध कारण के बंद हो सकता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यहाँ पर किसी घटना के परिणाम के लिए कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है।

आयत 88 (सूरए तौबा, 9:88)

अनुवाद: "मगर रसूल और जो लोग उनके साथ ईमान लाए हैं उन लोगों ने अपने अपने माल और अपनी अपनी जानों से जिहाद किया- यही वह लोग हैं जिनके लिए (हर तरह की) भलाइयाँ हैं और यही लोग कामयाब होने वाले हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में जिहाद करने वालों को एक विशेष पुरस्कार देने का दावा किया गया है। यह आयत बिना किसी तात्त्विक और प्रमाणित कारण के कहती है कि जो लोग जिहाद में भाग लेते हैं, वे सफलता प्राप्त करेंगे। Nyaya दर्शन में, किसी भी निष्कर्ष का समर्थन प्रमाण और तर्क द्वारा किया जाना चाहिए, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**

- आयत का संदेश सीधे तौर पर भौतिक और मानसिक शांति को युद्ध के माध्यम से स्थापित करने का संकेत देता है, जो नैतिक दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि युद्ध को कभी भी समाधान के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है, जब तक उसका उद्देश्य मानवीय कल्याण ना हो।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दावे के लिए कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

आयत 89 (सूरए तौबा, 9:89)

अनुवाद: "ख़ुदा ने उनके वास्ते (बेहष्त) के वह (हरे भरे) बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके (दरख़्तों के) नीचे नहरे जारी हैं (और ये) इसमें हमेशा रहेंगें यही तो बड़ी कामयाबी हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि जिहाद करने वालों के लिए स्वर्ग में बाग़ और नहरों की व्यवस्था की गई है। Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, इस कथन का कोई प्रमाणित या प्रमाणित ज्ञान नहीं है। यह दावा विश्वास और धार्मिक विचारों पर आधारित है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक समर्थन नहीं है।**
- **अगर यह प्रमाणित होता कि स्वर्ग और उसकी संपत्ति का कोई भौतिक अस्तित्व है, तो इस विचार को प्रमाणित किया जा सकता था। लेकिन बिना किसी तात्त्विक और भौतिक प्रमाण के, यह कथन केवल विश्वास पर आधारित है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 90 (सूरए तौबा, 9:90)

अनुवादः "और (तुम्हारे पास) कुछ हीला करने वाले गवार देहाती (भी) आ मौजदू हुए ताकि उनको भी (पीछे रह जाने की) इजाज़त दी जाए और जिन लोगों ने ख़ुदा और उसके रसूल से झूठ कहा था वह (घर में) बैठ रहे (आए तक नहीं) उनमें से जिन लोंगों ने कुफ्ऱ एख़्तेयार किया अनक़रीब ही उन पर दर्दनाक अज़ाब आ पहुँचेगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह कहा गया है कि कुछ लोग इजाज़त प्राप्त कर लेंगे, जबकि कुछ अन्य लोग कड़ी सजा प्राप्त करेंगे। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी दंड या सजा का कारण स्पष्ट और प्रमाणित होना चाहिए। यहां पर, यह निर्धारित नहीं किया गया कि क्यों कुछ लोग सजा से बच जाते हैं और अन्य लोग दंडित होते हैं।**
- **यह आयत बिना किसी प्रमाण या तात्त्विक आधार के दंड देने का दावा करती है, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दंड और सजा का कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

सारांश:

इन आयतों में जो दावे किए गए हैं, वे प्रमाणित और तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक हैं। इन आयतों में बिना किसी साक्ष्य या प्रमाण के दंड, पुरस्कार और धार्मिक आदेश दिए गए हैं, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते।

आयत 91-95 (सूरए तौबा, 9:91-95)

आयत 91 (सूरए तौबा, 9:91)

अनुवादः "ऐ रसूल, जिहाद में न जाने का न तो कमज़ोरों पर कुछ गुनाह है न बीमारों पर और न उन लोगों पर जो कुछ नहीं पाते कि ख़र्च करें बशर्ते कि ये लोग ख़ुदा और उसके रसूल की ख़ैर ख़्वाही करें। नेकी करने वालों पर (इल्ज़ाम की) कोई सबील नहीं और ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह कहा गया है कि जिहाद में न जाने का कोई गुनाह नहीं है अगर किसी की शारीरिक या भौतिक स्थिति के कारण वह इसमें भाग नहीं ले सकता। यह Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार उचित है क्योंकि यहाँ पर तात्त्विक कारण (कमज़ोरी, बीमारी या धन का अभाव) दंड से मुक्त कर रहे हैं।**
- **यह आयत "नेकी करने वालों पर इल्ज़ाम नहीं" कहकर यह सिद्ध करती है कि अगर किसी का इरादा नेक है, तो उसे किसी अन्य कारण से दंडित नहीं किया जाना चाहिए। यहाँ पर नैतिक विचार और तर्कसंगत आधार का पालन किया गया है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल खाती है क्योंकि इसमें दिए गए कारण (शारीरिक स्थिति, बीमारी) दंड से बचने का उचित कारण हैं।

आयत 92 (सूरए तौबा, 9:92)

अनुवाद: "और न उन्हीं लोगों पर कोई इल्ज़ाम है जो तुम्हारे पास आए कि तुम उनके लिए सवारी बाहम पहुँचा दो और तुमने कहा कि मेरे पास (तो कोई सवारी) मौजूद नहीं कि तुमको उस पर सवार करूँ तो वह लोग (मजबूरन) फिर गए और हसरत (व अफसोस) उसे उस ग़म में कि उन को ख़र्च मयस्सर न आया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह कहा गया है कि अगर किसी के पास संसाधन नहीं हैं तो उन्हें दोष नहीं दिया जाएगा, जैसे कि सवारी न देने के लिए। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का परिणाम उस कारण से अनिवार्य रूप से जुड़ा होना चाहिए।**
- **यहाँ पर यह उल्लेख किया गया है कि अगर किसी के पास साधन नहीं हैं, तो वह इसे सुलझाने के लिए जिम्मेदार नहीं होगा, और इससे कोई दंड या दोष नहीं उत्पन्न होगा। यह सिद्धांत केवल संसाधनों के अभाव को दोषमुक्त कर देता है।**

निष्कर्ष:
 यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल खाती है क्योंकि संसाधनों का अभाव स्वाभाविक रूप से किसी भी दोष के बिना है।

आयत 93 (सूरए तौबा, 9:93)

अनुवाद: "उनकी आँखों से आँसू जारी थे (इल्ज़ाम की) सबील तो सिर्फ उन्हीं लोगों पर है जिन्होंने बावजूद मालदार होने के तुमसे (जिहाद में) न जाने की इजाज़त चाही और उनके पीछे रह जाने वाले (औरतों, बच्चों) के साथ रहना पसन्द आया और ख़ुदा ने उनके दिलों पर (गोया) मोहर कर दी है तो ये लोग कुछ नहीं जानते।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह कहा गया है कि मालदार लोगों के लिए भी जिहाद में भाग नहीं लेने पर दंड की संभावना है, और इसके लिए कारण उनके दिलों पर मोहर होना बताया गया है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, एक कारण (दिलों पर मोहर होना) दिया गया है, लेकिन यह तर्कसंगत नहीं लगता, क्योंकि किसी का दिल "मोहर" करना बिना तात्त्विक और प्रमाणित आधार के अप्रासंगिक है।**
- **इसमें यह नहीं कहा गया कि क्यों और किस आधार पर किसी के दिल पर मोहर लगती है। यह केवल एक विश्वास आधारित विचार है, जो Nyaya दर्शन के आधार पर खड़ा नहीं होता।**

निष्कर्ष:
 यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका कारण (दिलों पर मोहर) तात्त्विक और प्रमाणित नहीं है।

आयत 94 (सूरए तौबा, 9:94)

अनुवाद: "जब तुम उनके पास (जिहाद से लौट कर) वापस आओगे तो ये (मुनाफ़िक़ीन) तुमसे (तरह तरह) की माअज़रत करेंगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि बातें न बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे (क्योंकि) हमे तो ख़ुदा ने तुम्हारे हालात से आगाह कर दिया है, अनक़रीब ख़ुदा और उसका रसूल तुम्हारी कारस्तानी को

मुलाहज़ा फरमाएगें फिर तुम ज़ाहिर व बातिन के जानने वालों (ख़ुदा) की हुज़ूरी में लौटा दिए जाओगे तो जो कुछ तुम (दुनिया में) करते थे (ज़र्रा ज़र्रा) बता देगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- इस आयत में मुनाफिक़ीन को चेतावनी दी जा रही है कि वे अपनी बातें बनाने की कोशिश करेंगे, लेकिन उनका व्यवहार और कार्य अंततः सामने आ जाएगा। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, यह विचार तात्त्विक रूप से सही है कि किसी के कार्यों का परिणाम और सही कारण उसके व्यवहार के माध्यम से उजागर होता है।
- यह चेतावनी उन लोगों के लिए दी गई है जो ईमानदारी से नहीं जीते और अपनी मंशा को छिपाने की कोशिश करते हैं, लेकिन वास्तविकता अंततः प्रकट हो जाती है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल खाती है क्योंकि यह तात्त्विक रूप से यह कह रही है कि किसी के कार्यों और कारणों का परिणाम अंततः सामने आता है।

आयत 95 (सूरए तौबा, 9:95)

अनुवाद: "जब तुम उनके पास (जिहाद से) वापस आओगे तो तुम्हारे सामने ख़ुदा की क़समें खाएगें ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो तो तुम उनकी तरफ से मुँह फेर लो, बेशक ये लोग नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नुम है (ये) सज़ा है उसकी जो ये (दुनिया में) किया करते थे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- इस आयत में मुनाफिक़ीन को नापाक और उनके लिए दंड की घोषणा की गई है, जो उनकी कार्यों के परिणाम के रूप में दिखाया गया है। Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि मुनाफिक़ीन का कार्य गलत था और उनका ठिकाना जहन्नुम है, लेकिन इस दावे का कोई प्रमाणित या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।
- यहाँ पर एक विश्वास आधारित बयान है जो बिना तात्त्विक या प्रमाणिक प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है, जो "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह बिना प्रमाणित और प्रमाणिक आधार के कोई निष्कर्ष प्रस्तुत करती है।

सारांश:

इन आयतों में दावे और तर्क धर्म, समाज और व्यक्ति के कार्यों के आधार पर किए गए हैं, लेकिन कई बार तात्त्विक और प्रमाणिक आधार की कमी दिखाई देती है। कुछ आयतों में तात्त्विक कारण दिए गए हैं, लेकिन कई आयतों में आधार केवल विश्वास और धार्मिक विचारों पर आधारित हैं, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते।

आयत 96-100 (सूरए तौबा, 9:96-100)

आयत 96 (सूरए तौबा, 9:96)

अनुवाद: "तुम्हारे सामने ये लोग क़समें खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो (भी) जाओ तो ख़ुदा बदकार लोगों से हरगिज़ कभी राज़ी नहीं होगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि लोग क़समें खाते हैं ताकि वे रसूल से अपनी स्थिति को सही साबित कर सकें, लेकिन ख़ुदा उन लोगों से कभी राज़ी नहीं होगा जो बदकार होते हैं। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, यह आयत एक तात्त्विक कारण देती है – बदकारियों की वजह से ख़ुदा का असंतोष। हालांकि, इस कारण को सही ठहराने के लिए प्रमाण और तात्त्विक आधार की आवश्यकता है, जो इस आयत में उपलब्ध नहीं है।**
- **यह दृष्टिकोण व्यक्ति की सच्चाई या नेक नीयत के बिना किसी भी तर्क या प्रमाण के बिना केवल ईश्वर की इच्छा और कथन पर आधारित है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से पूरी तरह मेल नहीं खाती, क्योंकि यहां जो कारण दिया गया है, वह सिर्फ एक विश्वास आधारित विचार है, न कि तात्त्विक प्रमाण।

आयत 97 (सूरए तौबा, 9:97)

अनुवाद: "(ये) अरब के गॅवार देहाती कुफ्र व निफाक़ में बड़े सख़्त हैं और इसी क़ाबिल हैं कि जो किताब ख़ुदा ने अपने रसूल पर नाज़िल फरमाई है उसके एहक़ाम न जानें और ख़ुदा तो बड़ा दाना हकीम है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह दावा किया गया है कि अरब के देहाती लोग कुफ्र और निफाक़ में सख़्त होते हैं और वे वह किताब नहीं जानते जो ख़ुदा ने अपने रसूल पर नाज़िल की है। Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में जो दावा किया गया है कि अरब के लोग किताब के आदेश नहीं जानते, इसके लिए कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।**
- **यह मात्र एक सामान्य कथन है जो बिना किसी प्रमाण और तथ्य के प्रस्तुत किया गया है, और "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए दावे के लिए कोई प्रमाणिक या तात्विक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।

आयत 98 (सूरए तौबा, 9:98)

अनुवाद: "और कुछ गॅवार देहाती (ऐसे भी हैं कि जो कुछ ख़ुदा की) राह में खर्च करते हैं उसे तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे हक़ में (ज़माने की) गर्दिशों के मुन्तज़िर (इन्तेज़ार में) हैं उन्हीं पर (ज़माने की) बुरी गर्दिश पड़े और ख़ुदा तो सब कुछ सुनता जानता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि कुछ देहाती लोग जो ख़ुदा की राह में खर्च करते हैं, उन्हें यह समझते हैं कि यह जुर्माना है, और वे आशा करते हैं कि दुनिया की परेशानियाँ उनके ऊपर न आएं। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, अगर कोई व्यक्ति ख़ुदा की राह में खर्च**

करता है तो उसे अच्छा परिणाम मिलना चाहिए, लेकिन यहाँ पर इसे एक बुरी स्थिति में फंसे होने के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- यह आयत दो विपरीत विचारों के बीच एक कंफ्यूजन उत्पन्न करती है, क्योंकि खर्च करना जो एक अच्छा कार्य है, उसे "जुर्माना" समझना और फिर बुरी परिस्थिति का सामना करना तर्कसंगत रूप से मेल नहीं खाता।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसने एक अच्छे कार्य (खर्च) को बुरी स्थिति से जोड़ दिया है, जो तात्त्विक रूप से अप्रत्याशित और उलझन भरा है।

आयत 99 (सूरए तौबा, 9:99)

अनुवाद: "और कुछ देहाती तो ऐसे भी हैं जो ख़ुदा और आख़िरत पर ईमान रखते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उसे ख़ुदा की (बारगाह में) नज़दीकी और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। आगाह रहो वाक़ई ये (ख़ैरात) ज़रूर उनके तक़र्रुब (क़रीब होने का) का बाइस है ख़ुदा उन्हें बहुत जल्द अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- इस आयत में कहा गया है कि कुछ देहाती लोग ख़ुदा और आख़िरत पर विश्वास करते हैं और जो खर्च करते हैं उसे ख़ुदा के पास नज़दीकी और रसूल की दुआओं का कारण मानते हैं। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि उनकी खैरात ख़ुदा की रहमत के करीब जाने का कारण बनेगी। लेकिन इस प्रकार के विश्वास को तर्कसंगत रूप से साबित नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है।
- यह एक विश्वास आधारित कथन है, जिसमें किसी कारण से परिणाम (ख़ुदा की रहमत) जोड़ने का प्रयास किया गया है, लेकिन यह दर्शन के तर्कों से मेल नहीं खाता।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से पूरी तरह मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका कारण (ख़ुदा की रहमत) केवल विश्वास पर आधारित है, न कि तात्त्विक प्रमाणों पर।

आयत 100 (सूरए तौबा, 9:100)

अनुवाद: "और मुहाजिरीन व अन्सार में से (ईमान की तरफ) सबक़त (पहल) करने वाले और वह लोग जिन्होंने नेक नीयती से (कुबूले ईमान में उनका साथ दिया ख़ुदा उनसे राज़ी और वह ख़ुदा से ख़ुश और उनके वास्ते ख़ुदा ने (वह हरे भरे) बाग़ जिन के नीचे नहरें जारी हैं तैयार कर रखे हैं वह हमेशा अब्दआलाबाद (हमेशा) तक उनमें रहेगें यही तो बड़ी कामयाबी हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **इस आयत में मुहाजिरीन और अन्सार के बारे में कहा गया है कि जिन्होंने ईमान में पहल की, उन्हें ख़ुदा ने बाग़ात में दाख़िल किया है जहाँ नहरें बहती हैं। Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि वे लोग जिन्हें इनाम मिलेगा, यह किसी प्रमाण या तात्त्विक आधार से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **यह आयत भी एक विश्वास आधारित कथन है, जिसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह दावे बिना प्रमाण या तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किए गए हैं।

सारांश:

इन आयतों में दिए गए विचार और दावे विभिन्न सिद्धांतों से मेल नहीं खाते हैं, क्योंकि अधिकांश में केवल विश्वास और धार्मिक विचारों पर आधारित दावे किए गए हैं, जबकि Nyaya दर्शन के सिद्धांतों में प्रमाण और तात्त्विक कारण की आवश्यकता होती है। "Hetu" और "Prameya" के सिद्धांतों से मेल नहीं खाने वाली ये आयतें तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर हैं।

आयत 101-105 (सूरए तौबा, 9:101-105)

आयत 101 (सूरए तौबा, 9:101)

अनुवाद: "और (मुसलमानों) तुम्हारे एतराफ़ (आस पास) के गॅवार देहातियों में से बाज़ मुनाफिक़ (भी) हैं और ख़ुद मदीने के रहने वालों मे से भी (बाज़ मुनाफिक़ हैं) जो निफ़ाक पर अड़ गए हैं (ऐ रसूल) तुम उन को नहीं

जानते (मगर) हम उनको (ख़ूब) जानते हैं अनक़रीब हम (दुनिया में) उनकी दोहरी सज़ा करेगें फिर ये लोग (क़यामत में) एक बड़े अज़ाब की तरफ लौटाए जाएगें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में दावा किया गया है कि मुनाफिक़ों की पहचान केवल ख़ुदा और रसूल की तरफ से की जा सकती है, जबकि इंसान इसे पहचानने में सक्षम नहीं हैं। Nyaya दर्शन में "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कारण के आधार पर कार्यों का परिणाम निर्धारित किया जाता है। यहां पर यह दावा किया गया है कि मुनाफिक़ों को दोहरी सज़ा दी जाएगी और फिर एक बड़े अज़ाब की तरफ उन्हें भेजा जाएगा।**
- **इसका कारण (Hetu) धर्म के खिलाफ नफ़रत और नफ़ासियत को बताया गया है, लेकिन इसे तर्क और प्रमाण के साथ नहीं प्रस्तुत किया गया है। इस आयत का कारण केवल विश्वास आधारित है और तात्विक या प्रमाणिक आधार से जुड़ा नहीं है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसके कारण का कोई तात्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है और यह केवल विश्वास पर आधारित है।

आयत 102 (सूरए तौबा, 9:102)

अनुवाद: "और कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का (तो) एकरार किया (मगर) उन लोगों ने भले काम को और कुछ बुरे काम को मिला जुला (कर गोलमाल) कर दिया क़रीब है कि ख़ुदा उनकी तौबा कुबूल करे (क्योंकि) ख़ुदा तो यक़ीनी बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि कुछ लोग अपने गुनाहों का एकरार करते हैं और अपने अच्छे और बुरे कामों को मिलाकर अपना व्यवहार सुधारने की कोशिश करते हैं, और ख़ुदा उनकी तौबा (पश्चाताप) स्वीकार कर सकता है क्योंकि वह बड़ा बख़्शने वाला है।**

- Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि तौबा के बाद गुनाहों को माफ़ किया जाएगा। हालांकि, इस कथन को प्रमाणिक रूप से सिद्ध नहीं किया गया है, और इसमें किसी प्रकार का तात्त्विक आधार नहीं दिया गया।

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह केवल एक विश्वास आधारित कथन है, न कि तात्त्विक या प्रमाणिक प्रमाण के साथ सिद्ध किया गया।

आयत 103 (सूरए तौबा, 9:103)

अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम उनके माल की ज़कात लो (और) इसकी बदौलत उनको (गुनाहो से) पाक साफ़ करो और उनके वास्ते दुआए ख़ैर करो क्योंकि तुम्हारी दुआ इन लोगों के हक़ में इत्मेनान (का बाइस है) और ख़ुदा तो (सब कुछ) सुनता (और) जानता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- इस आयत में कहा गया है कि माल की ज़कात लेकर, लोगों को पाक साफ़ किया जाए और उनकी दुआ की जाए, जिससे उनका दिल शांति और इत्मेनान पाए। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि ज़कात लेने और दुआ करने से परिणामस्वरूप किसी व्यक्ति का दिल शांति और इत्मेनान से भर जाएगा।
- हालांकि, यह दावा बिना किसी तात्त्विक या प्रमाणिक कारण के प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि ज़कात और दुआ करने से शांति और इत्मेनान का संबंध सीधे तौर पर सिद्ध नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यहां ज़कात और दुआ के परिणामस्वरूप शांति का संबंध एक सामान्य विश्वास है, जिसका कोई प्रमाणिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 104 (सूरए तौबा, 9:104)

अनुवाद: "क्या इन लोगों ने इतने भी नहीं जाना यक़ीनन ख़ुदा बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और वही ख़ैरातें (भी) लेता है और इसमें शक नहीं कि वही तौबा का बड़ा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा अपनी तौबा को स्वीकार करता है और वही ख़ैरात भी स्वीकार करता है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में यह कहा गया है कि तौबा और ख़ैरात के कारण बख़्शिश मिलती है, लेकिन इसका प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।**
- **यह एक विश्वास आधारित कथन है, जहां तात्त्विक कारण (Hetu) की बजाय केवल ख़ुदा की इच्छा पर आधारित दावे किए गए हैं।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई तर्कों की कोई प्रमाणिकता या कारण नहीं है, और यह केवल विश्वास पर आधारित है।

आयत 105 (सूरए तौबा, 9:105)

अनुवाद: "और (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम लोग अपने अपने काम किए जाओ अभी तो ख़ुदा और उसका रसूल और मोमिनीन तुम्हारे कामों को देखेगें और बहुत जल्द (क़यामत में) ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले (ख़ुदा) की तरफ लौटाए जाएगें तब वह जो कुछ भी तुम करते थे तुम्हें बता देगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि लोग अपने काम करते जाएं, और अंत में सभी के कर्मों का परिणाम ख़ुदा के पास जाएगा, जो सभी कार्यों को जानता है। Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि आख़िरत में सभी कर्मों का हिसाब होगा। हालांकि, इसे प्रमाण या तात्त्विक आधार से सिद्ध नहीं किया गया है, और यह एक विश्वास आधारित विचार है।**

निष्कर्ष:
 यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह दावा बिना प्रमाण या तात्त्विक कारण के प्रस्तुत किया गया है और केवल विश्वास पर आधारित है।

सारांश:

इन आयतों में दिए गए विचार और दावे विभिन्न Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते हैं, क्योंकि अधिकांश में केवल विश्वास और धार्मिक विचारों पर आधारित दावे किए गए हैं, जबकि Nyaya दर्शन के सिद्धांतों में प्रमाण और तात्त्विक कारण की आवश्यकता होती है। "Hetu" और "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाने वाली ये आयतें तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर हैं।

आयत 106-110 (सूरए तौबा, 9:106-110)

आयत 106 (सूरए तौबा, 9:106)

अनुवाद: "और कुछ लोग हैं जो हुक्मे ख़ुदा के उम्मीदवार किए गए हैं (उसको अख़्तेयार है) ख़्वाह उन पर अज़ाब करे या उन पर मेहरबानी करे और ख़ुदा (तो) बड़ा वाकिफकार हिकमत वाला है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा का अधिकार है कि वह किसी पर अज़ाब करे या मेहरबानी दिखाए। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कार्य का परिणाम उसके कारण से निर्धारित होता है। यहां यह दावा किया गया है कि ख़ुदा के पास यह अधिकार है, लेकिन इस निर्णय के कारण और इसके परिणाम के सिद्धांत पर कोई स्पष्ट तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।**
- **"Hetu" के सिद्धांत में हम यह देख सकते हैं कि कारणों का निर्धारण तात्त्विक या प्रमाणिक आधार पर होना चाहिए, लेकिन इस आयत में यह एक विश्वास आधारित विचार है, जिसमें कोई कारण नहीं दिखाया गया है।**

निष्कर्ष:
 यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए कारण के लिए कोई तात्त्विक आधार या प्रमाण नहीं है।

आयत 107 (सूरए तौबा, 9:107)

अनुवाद: "और (वह लोग भी मुनाफिक़ हैं) जिन्होने (मुसलमानों के) नुकसान पहुचाने और कुफ्ऱ करने वाले और मोमिनीन के दरम्यािन तफरक़ा (फूट) डालते और उस शख़्स की घात में बैठने के वास्ते मस्जिद बनाकर खड़ी की है जो ख़ुदा और उसके रसूल से पहले लड़ चुका है (और लुत्फ़ तो ये है कि) ज़रूर क़समें खाएगें कि हमने भलाई के सिवा कुछ और इरादा ही नहीं किया और ख़ुदा ख़ुद गवाही देता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह दावा किया गया है कि कुछ लोग मस्जिदें बना रहे हैं ताकि वे मुसलमानों के बीच फूट डाल सकें और उनका उद्देश्य केवल भलाई का दिखावा करना है। Nyaya दर्शन में "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कथन को सत्य मानने से पहले उसके प्रमाणिक आधार की आवश्यकता होती है। इस आयत में दावा किया गया है कि इन लोगों के इरादे और कार्यों के बारे में ख़ुदा गवाह है, लेकिन इस प्रकार के व्यक्तिगत इरादों का प्रमाण देना चुनौतीपूर्ण है।**
- **यहाँ पर यह दावा किया गया है कि ख़ुदा इन लोगों के इरादों की गवाही देता है, जो कि एक विश्वास आधारित कथन है और इसका कोई प्रमाणिक आधार या तात्त्विक कारण नहीं है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के किया गया है।

आयत 108 (सूरए तौबा, 9:108)

अनुवाद: "ये लोग यक़ीनन झूठे हैं (ऐ रसूल) तुम इस (मस्जिद) में कभी खड़े भी न होना वह मस्जिद जिसकी बुनियाद अव्वल रोज़ से परहेज़गारी पर रखी गई है वह ज़रूर उसकी ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े होकर (नमाज़ पढ़ो क्योंकि) उसमें वह लोग हैं जो पाक व पाकीज़ा रहने को पसन्द करते हैं और ख़ुदा भी पाक व पाकीज़ा रहने वालों को दोस्त रखता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **इस आयत में दावा किया गया है कि किसी मस्जिद में खड़ा होकर नमाज़ पढ़ने की वैधता केवल उस मस्जिद की बुनियाद पर निर्भर करती है, जो परहेज़गारी पर आधारित हो। Nyaya दर्शन में "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि मस्जिद की बुनियाद और उसमें नमाज़ पढ़ने के अधिकार के बीच अनिवार्य संबंध है।**
- **हालांकि, इस विचार को प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस तर्क या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह दावा विश्वास पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर है क्योंकि किसी स्थान की वैधता केवल उसकी बुनियाद पर निर्भर नहीं हो सकती, बल्कि कई अन्य कारणों पर भी आधारित हो सकती है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दो वस्तुओं के बीच अनिवार्य संबंध का कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है, और यह केवल एक विश्वास आधारित कथन है।

आयत 109 (सूरए तौबा, 9:109)

अनुवाद: "क्या जिस शख़्स ने ख़ुदा के ख़ौफ और ख़ुशनूदी पर अपनी इमारत की बुनियाद डाली हो वह ज़्यादा अच्छा है या वह शख़्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद इस बोदे किनारे के लब पर रखी हो जिसमें दरार पड़ चुकी हो और अगर वह चाहता हो फिर उसे ले दे के जहन्नुम की आग में फट पड़े और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को मंज़िलें मक़सूद तक नहीं पहुचाता करता।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में दो प्रकार की बुनियाद का उल्लेख किया गया है, एक वह जो ख़ुदा के ख़ौफ और ख़ुशनूदी पर आधारित है और दूसरी वह जो अस्थिर और कमजोर है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कार्य के परिणाम को उसके कारण से निर्धारित किया जाता है। यहां यह कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति ख़ुदा के ख़ौफ और ख़ुशनूदी पर अपनी बुनियाद रखता है तो उसका कार्य अच्छा है, जबकि दूसरा अस्थिर कार्य खतरनाक है।**

- **हालांकि, यह दावा तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं किया गया है, क्योंकि कोई भी कार्य उसकी बुनियाद से ही अच्छे या बुरे नहीं होते। इस विचार को प्रमाणिक रूप से प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस तर्क नहीं है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई बुनियाद की गुणवत्ता का कोई तात्त्विक कारण नहीं बताया गया है और यह केवल एक विश्वास आधारित विचार है।

आयत 110 (सूरए तौबा, 9:110)

अनुवाद: "(ये इमारत की) बुनियाद जो उन लोगों ने क़ायम की उसके सबब से उनके दिलो में हमेषा धरपकड़ रहेगी यहाँ तक कि उनके दिलों के परख़चे उड़ जाएँ और ख़ुदा तो बड़ा वाकिफ़कार हकीम हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **इस आयत में दावा किया गया है कि बुनियाद के कारण लोगों के दिलों में हमेशा परेशानी रहेगी और उनका मानसिक स्थिति बिगड़ेगा। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि बुनियाद और दिलों की परेशानी के बीच अनिवार्य संबंध है।**
- **हालांकि, यह दावा किसी प्रमाणिक कारण से समर्थित नहीं है। यह केवल एक विश्वास आधारित कथन है और इसका कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें बुनियाद और दिलों की परेशानी के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है और यह केवल विश्वास पर आधारित विचार है।

सारांश:

इन आयतों में दिए गए विचार और दावे Nyaya दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों से मेल नहीं खाते हैं, क्योंकि ये विश्वास और धर्म आधारित दावे हैं, जो प्रमाण और तात्त्विक कारणों से समर्थित नहीं हैं। "Hetu" और

"Vyapti" के सिद्धांतों के तहत, इन आयतों में दिए गए तर्कों में कोई वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं है, और ये विश्वास पर आधारित हैं।

आयत 111-115 (सूरए तौबा, 9:111-115)

आयत 111 (सूरए तौबा, 9:111)

अनुवाद: "इसमें तो शक ही नहीं कि ख़ुदा ने मोमिनीन से उनकी जानें और उनके माल इस बात पर ख़रीद लिए हैं कि (उनकी क़ीमत) उनके लिए बेहष्त है (इसी वजह से) ये लोग ख़ुदा की राह में लड़ते हैं तो (कुफ़्फ़ार को) मारते हैं और ख़ुद (भी) मारे जाते हैं (ये) पक्का वायदा है (जिसका पूरा करना) ख़ुदा पर लाज़िम है और ऐसा पक्का है कि तौरैत और इन्जील और कुरान (सब) में (लिखा हुआ है) और अपने एहद का पूरा करने वाला ख़ुदा से बढ़कर कौन है तुम तो अपनी ख़रीद फरोख़्त से जो तुमने ख़ुदा से की है खुषियाँ मनाओ यही तो बड़ी कामयाबी है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने मोमिनीन से उनकी जान और माल इस शर्त पर ख़रीद लिए हैं कि उनका पुरस्कार स्वर्ग (बेहष्त) है। यहां "Hetu" (कारण) का सिद्धांत लागू किया जा सकता है, जो कहता है कि किसी भी कार्य का परिणाम उसके कारण से निर्धारित होता है। इस आयत में कहा गया है कि जो लोग ख़ुदा की राह में लड़ते हैं, उनका परिणाम स्वर्ग है, लेकिन यह कारण (उनके कर्मों का परिणाम) केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तात्त्विक आधार या प्रमाण नहीं दिया गया है।**
- **इस विचार को Nyaya दर्शन के "Hetu" के दृष्टिकोण से देखा जाए, तो इसका कोई भौतिक या प्रमाणिक कारण नहीं है। स्वर्ग का दावा केवल विश्वास पर आधारित है, जो कि तात्त्विक दृष्टिकोण से समस्याग्रस्त हो सकता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें परिणाम (स्वर्ग) के लिए कोई तात्त्विक कारण या प्रमाण नहीं दिया गया है। यह केवल विश्वास पर आधारित विचार है।

आयत 112 (सूरए तौबा, 9:112)

अनुवादः "ये लोग तौबा करने वाले इबादत गुज़ार (ख़ुदा की) हम्दो सना (तारीफ़) करने वाले (उस की राह में) सफर करने वाले रूकूउ करने वाले सजदा करने वाले नेक काम का हुक्म करने वाले और बुरे काम से रोकने वाले और ख़ुदा की (मुक़र्रर की हुयी) हदो को निगाह रखने वाले हैं और (ऐ रसूल) उन मोमिनीन को (बेहिष्त की) ख़ुषख़बरी दे दो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषणः

- **इस आयत में बताया गया है कि जो लोग ख़ुदा के आदेशों का पालन करते हैं, उनके लिए स्वर्ग की ख़ुशख़बरी है। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि उन कार्यों (तौबा, इबादत, नेक काम आदि) और स्वर्ग के बीच अनिवार्य संबंध है।**
- **हालांकि, इस विचार में कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है, क्योंकि किसी कार्य (तौबा, इबादत आदि) का परिणाम (स्वर्ग) प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस कारण या आधार नहीं है। यह केवल विश्वास पर आधारित है, और इसे "Vyapti" के सिद्धांत से सिद्ध करना मुश्किल है क्योंकि इसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक आधार नहीं है।**

निष्कर्षः
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कार्य और उसके परिणाम (स्वर्ग) के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है।

आयत 113 (सूरए तौबा, 9:113)

अनुवादः "नबी और मोमिनीन पर जब ज़ाहिर हो चुका कि मुशरेकीन जहन्नुमी है तो उसके बाद मुनासिब नहीं कि उनके लिए मग़फिरत की दुआए माँगें अगरचे वह मुशरेकीन उनके क़राबतदार हो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषणः

- **इस आयत में कहा गया है कि जब यह स्पष्ट हो गया है कि मुशरेकीन (सहायक या बहुदेववादी) जहन्नुमी हैं, तो उनके लिए दुआ नहीं की जानी चाहिए, भले ही वे नाते-रिश्तेदार हों। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कार्य का परिणाम उसके कारण से निर्धारित होता है,**

लेकिन यहां यह दावा किया गया है कि जब किसी को पहले ही जहन्नुमी घोषित कर दिया गया है, तो उनके लिए दुआ करना गलत है।
- इस विचार का कोई प्रमाण या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है। यह विश्वास आधारित विचार है और इसका तात्त्विक आधार या कारण प्रस्तुत नहीं किया गया है। "Hetu" के दृष्टिकोण से यह एक निष्कलंक और बिना प्रमाण का दावा है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कार्य (दुआ) के निषेध का कोई तात्त्विक कारण या प्रमाण नहीं दिया गया है। यह केवल विश्वास पर आधारित है।

आयत 114 (सूरए तौबा, 9:114)

अनुवाद: "और इबराहीम का अपने बाप के लिए मग़फिरत की दुआ माँगना सिर्फ इस वायदे की वजह से था जो उन्होंने अपने बाप से कर लिया था फिर जब उनको मालूम हो गया कि वह यक़ीनी ख़ुदा का दुश्मन है तो उससे बेज़ार हो गए, बेशक इबराहीम यक़ीनन बड़े दर्दमन्द बुर्दबार (सहन करने वाले) थे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- इस आयत में इबराहीम (अलैहिस्सलाम) के बाप के लिए दुआ की वजह का विवरण दिया गया है। पहले उन्होंने अपने बाप के लिए दुआ की क्योंकि यह वायदा था, लेकिन बाद में जब उन्हें यह पता चला कि उनका बाप ख़ुदा का दुश्मन है, तो उन्होंने उससे बेज़ार हो गए। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के तहत, यह दावा किया गया है कि इबराहीम ने दुआ की थी, लेकिन बाद में उनके बाप के कृत्य ने उनकी दुआ का कारण बदल दिया।
- हालांकि, यह विचार तात्त्विक रूप से कमजोर हो सकता है, क्योंकि इबराहीम की दुआ और उसके परिणाम (दुआ की अस्वीकृति) के बीच का कारण स्पष्ट नहीं किया गया है। यह निर्णय विश्वास और विश्वास आधारित है, जिसमें कोई प्रमाणिक आधार नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कार्य (दुआ) और उसके परिणाम के बीच कोई स्पष्ट और प्रमाणिक कारण नहीं दिया गया है।

आयत 115 (सूरए तौबा, 9:115)

अनुवाद: "ख़ुदा की ये शान नहीं कि किसी क़ौम को जब उनकी हिदायत कर चुका हो उसके बाद बेशक ख़ुदा उन्हें गुमराह कर दे हता (यहां तक) कि वह उन्हीं चीज़ों को बता दे जिससे वह परहेज़ करें बेशक ख़ुदा हर चीज़ से (वाक़िफ है)।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा के लिए यह उचित नहीं है कि उसने किसी क़ौम को हिदायत दी हो और फिर उन्हें गुमराह कर दे। Nyaya दर्शन में "Pramana" (प्रमाणित ज्ञान) का सिद्धांत है, जो यह कहता है कि केवल प्रमाणित और सत्य ज्ञान ही वास्तविक होता है। इस आयत में यह विचार किया गया है कि ख़ुदा के निर्णयों का आधार उसकी पूर्ण जानकारी और सत्य ज्ञान पर आधारित होना चाहिए।**
- **हालांकि, इस विचार का प्रमाणित आधार (वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण) नहीं है, क्योंकि यह केवल विश्वास पर आधारित है। "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, यह विश्वास आधारित विचार को सत्य के रूप में प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए ज्ञान का प्रमाणित और तात्त्विक आधार नहीं है। यह केवल विश्वास आधारित है।

सारांश:

इन आयतों में दिए गए विचार और दावे Nyaya दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों से मेल नहीं खाते हैं, क्योंकि ये विश्वास और धर्म आधारित दावे हैं, जो प्रमाण और तात्त्विक कारणों से समर्थित नहीं हैं। "Hetu", "Vyapti" और "Pramana" के सिद्धांतों के तहत, इन आयतों में दिए गए तर्कों में कोई वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं है, और ये विश्वास पर आधारित हैं।

आयत 116-120 (सूरए तौबा, 9:116-120) का आलोचनात्मक विश्लेषण:

आयत 116 (सूरए तौबा, 9:116)

अनुवाद: "इसमें तो शक ही नहीं कि सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत ख़ुदा ही के लिए ख़ास है वही (जिसे चाहे) जिलाता है और (जिसे चाहे) मारता है और तुम लोगों का ख़ुदा के सिवा न कोई सरपरस्त है न मददगार।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:

1. **वास्तविकता और प्रमाण का अभाव: आयत में यह कहा गया है कि सभी सत्ता (हुकूमत) केवल ईश्वर की है, और वह ही जीवन और मृत्यु देता है। इस दृष्टिकोण का कोई वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन में किसी भी ज्ञान का प्रमाणीकरण आवश्यक होता है, लेकिन यहां धार्मिक विश्वास पर आधारित ज्ञान दिया गया है।**
2. **आध्यात्मिक दृष्टिकोण: इस कथन में "हुकूमत" और "जिलाना-मारना" एक उच्चारण पर आधारित हैं, जो एक तात्त्विक परिपेक्ष्य के बिना हैं। जीवन और मृत्यु का प्रश्न, किसी भी तात्त्विक सिद्धांत पर आधारित नहीं है, जिससे यह विचार केवल विश्वास पर आधारित हो जाता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें प्रमाणीकरण का कोई तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। जीवन और मृत्यु के विषय को केवल विश्वास के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

आयत 117 (सूरए तौबा, 9:117)

अनुवाद: "अलबत्ता ख़ुदा ने नबी और उन मुहाजिरीन अन्सार पर बड़ा फज़ल किया जिन्होंने तंगदस्ती के वक़्त रसूल का साथ दिया और वह भी उसके बाद कि क़रीब था कि उनमे से कुछ लोगों के दिल जगमगा जाएँ फिर ख़ुदा ने उन पर (भी) फज़ल किया इसमें शक नहीं कि वह उन लोगों पर पड़ा तरस खाने वाला मेहरबान है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

1. **प्रमाणित परिणाम का अभाव: आयत में यह कहा गया है कि कुछ लोगों ने रसूल का साथ दिया और इसके परिणामस्वरूप ख़ुदा ने उन पर फज़ल (कृपा) किया। हालांकि इस कथन में किसी निश्चित और अनिवार्य परिणाम का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं है। Nyaya दर्शन में, हर घटना का एक स्पष्ट और प्रमाणित परिणाम होना चाहिए, जो यहाँ मौजूद नहीं है।**
2. **व्यक्तिगत कार्य और परिणाम: आयत में कोई विशिष्ट कारण-प्रभाव (कर्म-फल) संबंध स्थापित नहीं किया गया है, जिससे यह सिद्धांत प्रमाणित या विश्लेषित किया जा सके।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कर्म और उसके परिणाम के बीच अनिवार्य संबंध नहीं है।

आयत 118 (सूरए तौबा, 9:118)

अनुवाद: "और उन यमीमों पर (भी फ़ज़ल किया) जो (जिहाद से पीछे रह गए थे और उन पर सख़्ती की गई) यहाँ तक कि ज़मीन बावजूद उस वसअत (फैलाव) के उन पर तंग हो गई और उनकी जानें (तक) उन पर तंग हो गई और उन लोगों ने समझ लिया कि ख़ुदा के सिवा और कहीं पनाह की जगह नहीं फिर ख़ुदा ने उनको तौबा की तौफीक दी ताकि वह (ख़ुदा की तरफ) रूजू करें बेशक ख़ुदा ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषण:

1. **कारण और परिणाम का अभाव: आयत में यह कहा गया है कि उन लोगों ने अपने कर्मों के परिणामस्वरूप ख़ुदा से तौबा की तौफीक प्राप्त की। यहाँ पर कोई तात्त्विक या प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है, जो इस तौबा की स्वीकृति का कारण बना हो। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी आध्यात्मिक या दैवीय दंड या कृपा को तर्कसंगत और प्रमाणित किया जाना चाहिए।**
2. **कारण का अस्पष्टता: इस आयत में जो तौबा की स्वीकृति का दावा किया गया है, उसका कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया है। यह केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो तात्त्विक रूप से अस्पष्ट है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें तौबा के कारण का कोई प्रमाणित आधार नहीं दिया गया है।

आयत 119 (सूरए तौबा, 9:119)

अनुवाद: "ऐ ईमानदारों ख़ुदा से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

1. **ज्ञान का स्रोत: इस आयत में "सच्चों के साथ हो जाओ" का आदेश दिया गया है, लेकिन इसके लिए कोई प्रमाणिक या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी आदेश या मार्गदर्शन का प्रमाणीकरण आवश्यक होता है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**
2. **सच्चाई का निर्धारण: सच्चे लोग कौन हैं और उनका चयन कैसे किया जाएगा, इसका कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं दिया गया है। यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसमें कोई ठोस प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें सत्य के निर्धारण का कोई प्रमाणित आधार नहीं दिया गया है।

आयत 120 (सूरए तौबा, 9:120)

अनुवाद: "मदीने के रहने वालों और उनके गिर्दोनवा (आस पास) देहातियों को ये जायज़ न था कि रसूल ख़ुदा का साथ छोड़ दें और न ये (जायज़ था) कि रसूल की जान से बेपरवा होकर अपनी जानों के बचाने की फ्रिक करें ये हुक्म उसी सब्ब से था कि उन (जिहाद करने वालों) को ख़ुदा की रूह में जो तकलीफ़ प्यास की या मेहनत या भूख की षिद्दत की पहुँचती है या ऐसी राह चलते हैं जो कुफ़्फ़ार के ग़ैज़ (ग़ज़ब का बाइस हो या किसी दुष्मन से कुछ ये लोग हासिल करते हैं तो बस उसके ऐवज़ में (उनके नामए अमल में) एक नेक काम लिख दिया जाएगा बेशक ख़ुदा नेकी करने वालों का अज्र (व सवाब) बरबाद नहीं करता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

1. **कार्य और उसके परिणाम का निश्चितता का अभाव: इस आयत में यह कहा गया है कि जिनको कठिनाइयाँ और तकलीफें सहनी पड़ीं, उनके कर्मों का फल उनके नामे-अमल में लिखा जाएगा। हालांकि यह कोई सिद्ध प्रमाण नहीं है कि यह कर्मो का फल निश्चित रूप से किस प्रकार होगा। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का परिणाम एक निश्चित और अनिवार्य संबंध होना चाहिए, जो यहाँ स्पष्ट नहीं है।**
2. **सजा और पुरस्कार: इस आयत में मेहनत और कठिनाई के बदले सजा या पुरस्कार का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणित कारण नहीं है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कर्म और उसके परिणाम के बीच कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में जो कर्म और दैवीय पुरस्कार, सजा या मार्गदर्शन का दावा किया गया है, वे प्रमाणिकता और तात्त्विक दृष्टिकोण से समर्थित नहीं हैं। इन आयतों में किसी भी आदेश या मार्गदर्शन के लिए ठोस प्रमाण, कारण, या निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं किया गया है, जिससे ये आयतें वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से विवादित और अप्रासंगिक बन जाती हैं।

आयत 121-125 (सूरए तौबा, 9:121-125) का आलोचनात्मक विश्लेषण:

आयत 121 (सूरए तौबा, 9:121)

अनुवाद: "और ये लोग (ख़ुदा की राह में) थोड़ा या बहुत माल नहीं खर्च करते और किसी मैदान को नहीं क़तआ करते मगर फौरन (उनके नामाए अमल में) उनके नाम लिख दिया जाता है ताकि ख़ुदा उनकी कारगुज़ारियों का उन्हें अच्छे से अच्छा बदला अता फरमाए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

1. **कारण और परिणाम का अनिवार्य संबंध: इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग ख़ुदा की राह में खर्च करते हैं, उनका नाम अच्छे से अच्छे बदले के रूप में लिखा जाता है। हालांकि, यह कथन किसी निश्चित और अनिवार्य परिणाम का दावा नहीं करता है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी कार्य और उसके परिणाम के बीच अनिवार्य संबंध होना चाहिए, लेकिन यह आयत केवल एक संभावना (जो अच्छा होगा) पर आधारित है, जो तात्त्विक रूप से सुनिश्चित नहीं है।**
2. **नाम लिखने का प्रमाण: आयत में यह उल्लेख किया गया है कि उनके अच्छे कार्यों के बदले उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा, लेकिन यह भी स्पष्ट नहीं किया गया कि यह पुरस्कार किस आधार पर दिया जाएगा और इसका तात्त्विक प्रमाण क्या है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कार्य और उसके परिणाम के बीच अनिवार्य संबंध नहीं बताया गया है।

आयत 122 (सूरए तौबा, 9:122)

अनुवादः "और ये भी मुनासिब नहीं कि मोमिननि कुल के कुल (अपने घरों में) निकल खड़े हों उनमें से हर गिरोह की एक जमाअत (अपने घरों से) क्यों नहीं निकलती ताकि इल्मे दीन हासिल करे और जब अपनी क़ौम की तरफ पलट के आवे तो उनको (अज़्र व आख़िरत से) डराए ताकि ये लोग डरें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषणः

1. **ज्ञान का स्रोत और वैधता: इस आयत में यह निर्देश दिया गया है कि मुसलमानों को दीन का ज्ञान हासिल करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करनी चाहिए। हालांकि, इसके लिए कोई प्रमाण या तात्विक आधार नहीं दिया गया है कि यह ज्ञान वास्तव में कैसे प्राप्त किया जाएगा और यह ज्ञान किसे माना जाएगा। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान को प्राप्त करने का तरीका प्रमाणित होना चाहिए, जबकि यहां यह केवल धार्मिक आदेश है।**
2. **ज्ञान की पहचानः इस आयत में यह भी नहीं बताया गया कि वह "इल्मे दीन" कौन सा है और इसे कौन निर्धारित करेगा, जो एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।**

निष्कर्षः
यह आयत Pramana के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ज्ञान के प्रमाण और वैधता का कोई स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 123 (सूरए तौबा, 9:123)

अनुवादः "ऐ ईमानदारों कुफ्फार में से जो लोग तुम्हारे आस पास के है उन से लड़ों और (इस तरह लड़ना) चाहिए कि वह लोग तुम में करारापन महसूस करें और जान रखो कि बेशुबहा ख़ुदा परहेज़गारों के साथ है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषणः

1. **कारण और न्याय का अभावः आयत में यह आदेश दिया गया है कि मुस्लिम समुदाय को अपने आसपास के कुफ्फार से लड़ाई करनी चाहिए। हालांकि, इसका कोई प्रमाण या तात्विक कारण नहीं बताया गया कि क्यों यह युद्ध अनिवार्य है। Nyaya दर्शन में हर कार्य के लिए एक स्पष्ट और न्यायसंगत कारण होना चाहिए, लेकिन यहां केवल धार्मिक आदेश है।**
2. **लड़ाई के उद्देश्य का अस्पष्टताः इस आयत में लड़ाई का उद्देश्य और परिणाम स्पष्ट नहीं है, और इस कारण यह केवल विश्वास पर आधारित निर्देश प्रतीत होता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कार्य के लिए स्पष्ट और प्रमाणित कारण का अभाव है।

आयत 124 (सूरए तौबा, 9:124)

अनुवाद: "और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उन मुनाफिक़ीन में से (एक दूसरे से) पूछता है कि भला इस सूरे ने तुममें से किसी का ईमान बढ़ा दिया तो जो लोग ईमान ला चुके हैं उनका तो इस सूरे ने ईमान बढ़ा दिया और वह वहा उसकी खुशियाँ मनाते है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:

1. **ईमान का वृद्धि: इस आयत में यह कहा गया है कि जब कोई सूरा नाज़िल होता है, तो कुछ लोग अपने ईमान में वृद्धि महसूस करते हैं। लेकिन यह एक व्यक्तिगत और मानसिक अवस्था है, जिसे प्रमाणित या तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता। Nyaya दर्शन में किसी भी ज्ञान या विश्वास को एक वस्तु (Prameya) के रूप में देखा जाता है, जो प्रमाणित किया जा सके, जबकि यह एक मानसिक और धार्मिक प्रतिक्रिया है, जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
2. **प्रभाव और कारण: आयत में यह कहा गया है कि सूरा ईमान बढ़ाता है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है कि क्यों ऐसा होता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ईमान की वृद्धि को तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं किया गया है।

आयत 125 (सूरए तौबा, 9:125)

अनुवाद: "मगर जिन लोगों के दिल में (निफाक़ की) बीमारी है तो उन (पिछली) ख़बासत पर इस सूरो ने एक ख़बासत और बढ़ा दी और ये लोग कुफ्ऱ ही की हालत में मर गए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

1. **विकार और परिणाम: आयत में यह कहा गया है कि जिन लोगों के दिलों में नफाक़ की बीमारी है, इस सूरा ने उनकी स्थिति और अधिक खराब कर दी। लेकिन इसका कोई स्पष्ट और अनिवार्य**

कारण नहीं दिया गया है कि क्यों इस सूरा ने नफाक़ की बीमारी को बढ़ा दिया। Nyaya दर्शन में किसी भी घटना का परिणाम निश्चित और प्रमाणित होना चाहिए, जो यहां स्पष्ट नहीं है।

2. **कुफ्र की स्थिति का अभाव: आयत में यह भी कहा गया है कि ये लोग कुफ्र में मरे, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि क्यों और कैसे वे कुफ्र में मरे, और इस स्थिति को प्रमाणित कैसे किया जा सकता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी विशेष घटना के परिणाम का स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में जो कर्म और दैवीय आदेश दिए गए हैं, उनके प्रमाण और तात्त्विक आधार की कमी है। प्रत्येक आयत में या तो कारण और परिणाम का अनिवार्य संबंध नहीं बताया गया, या फिर ज्ञान और शिक्षा का प्रमाणीकरण नहीं किया गया। इसके परिणामस्वरूप ये आयतें वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से विवादित और अप्रासंगिक बन जाती हैं।

आयत 126-129 (सूरए तौबा, 9:126-129) का आलोचनात्मक विश्लेषण:

आयत 126 (सूरए तौबा, 9:126)

अनुवाद: "क्या वह लोग (इतना भी) नहीं देखते कि हर साल एक मरतबा या दो मरतबा बला में मुबितला किए जाते हैं फिर भी न तो ये लोग तौबा ही करते हैं और न नसीहत ही मानते हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

1. **कारण और परिणाम का संबंध: इस आयत में यह कहा गया है कि लोग हर साल कठिनाइयों और संकटों में पड़ते हैं, लेकिन फिर भी वे तौबा नहीं करते। हालांकि, इसका कोई स्पष्ट और निश्चित कारण नहीं बताया गया कि क्यों यह लोग तौबा नहीं करते। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी घटना के परिणाम और कारण का अनिवार्य संबंध होना चाहिए, लेकिन यहां केवल एक स्थिति का वर्णन किया गया है, जिससे कारण और परिणाम का कोई स्पष्ट संबंध नहीं है।**

2. **नसीहत का असर: इस आयत में यह भी कहा गया है कि लोग नसीहत नहीं मानते। Nyaya दर्शन में, किसी सलाह या शिक्षा के असर को प्रमाणित किया जाना चाहिए, लेकिन यहां यह केवल एक सामान्य कथन है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कारण और परिणाम के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं बताया गया है।

आयत 127 (सूरए तौबा, 9:127)

अनुवाद: "और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उसमें से एक की तरफ एक देखने लगा (और ये कहकर कि) तुम को कोई मुसलमान देखता तो नहीं है फिर (अपने घर) पलट जाते हैं (ये लोग क्या पलटेगें गोया) ख़ुदा ने उनके दिलों को पलट दिया है इस सबब से कि ये बिल्कुल नासमझ लोग हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)
विश्लेषण:

1. **हृदय का पलटना: आयत में यह कहा गया है कि जब सूरा नाज़िल होता है, तो लोग अपने दिलों की स्थिति को बदल लेते हैं। यह एक मानसिक अवस्था है, लेकिन इसे प्रमाणित या तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता। Nyaya दर्शन में, किसी भी ज्ञान को प्रमाणित किया जाना चाहिए, और हृदय की स्थिति को इस तरह से देखना केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है, जो तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं है।**
2. **प्रमाण की कमी: आयत में यह कहा गया है कि लोग अपने दिलों को बदल लेते हैं, लेकिन इसके लिए कोई तात्त्विक आधार या प्रमाण नहीं दिया गया है कि यह बदलाव कैसे और क्यों हुआ।**

निष्कर्ष:
यह आयत Pramana के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें हृदय के बदलाव को प्रमाणित नहीं किया गया है।

आयत 128 (सूरए तौबा, 9:128)

अनुवाद: "लोगों तुम ही में से (हमारा) एक रसूल तुम्हारे पास आ चुका (जिसकी शफक़्क़त (मेहरबानी) की ये हालत है कि) उस पर शाक़ (दुख) है कि तुम तकलीफ उठाओ और उसे तुम्हारी बेहूदी का हौका है इमानदारो पर हद दर्जे शफीक़ मेहरबान हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषण:

1. **दुःख का कारण: आयत में यह कहा गया है कि रसूल को दुःख होता है क्योंकि लोग तकलीफ उठाते हैं। लेकिन, यह केवल एक भावनात्मक स्थिति है, और इसका कोई स्पष्ट तात्त्विक कारण नहीं बताया गया है। Nyaya दर्शन में, हर घटना के लिए एक स्पष्ट और न्यायसंगत कारण होना चाहिए, लेकिन यहां यह केवल एक व्यक्तिगत और भावनात्मक स्थिति का वर्णन है।**
2. **दुःख और कष्ट का निवारण: इस आयत में रसूल का दुःख दिखाया गया है, लेकिन इस दुःख को दूर करने के लिए कोई तात्त्विक कारण या समाधान नहीं दिया गया है। इसके अलावा, यह दिखाया गया है कि वह अपने अनुयायियों के लिए मेहरबान हैं, लेकिन इसके लिए कोई प्रमाण नहीं दिया गया है कि यह वास्तव में है।**

निष्कर्ष:
यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दुःख और कष्ट का स्पष्ट और प्रमाणित कारण नहीं बताया गया है।

आयत 129 (सूरए तौबा, 9:129)

अनुवाद: "ऐ रसूल अगर इस पर भी ये लोग (तुम्हारे हुक्म से) मुँह फेरें तो तुम कह दो कि मेरे लिए ख़ुदा काफी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैने उस पर भरोसा रखा है वही अर्श (ऐसे) बुर्ज़ूग (मख़लूका का) मालिक है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण:

1. **भरोसा और उसका परिणाम: इस आयत में यह कहा गया है कि यदि लोग रसूल के हुक्म से मुँह फेरें, तो रसूल को यह विश्वास करना चाहिए कि ख़ुदा ही उनके लिए पर्याप्त है। हालांकि, यह केवल एक विश्वास या व्यक्तिगत भावना है, जिसका तात्त्विक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन में, किसी भी घटना के परिणाम और उसके कारण का अनिवार्य और प्रमाणित संबंध होना चाहिए, लेकिन यहां केवल विश्वास और आत्मनिर्भरता की बात की गई है।**
2. **विश्वास का प्रभाव: आयत में विश्वास और भरोसे के विषय में बताया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि इस विश्वास का कोई प्रमाणित और तात्त्विक प्रभाव क्या होगा।**

निष्कर्ष:
यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें विश्वास और परिणाम के बीच अनिवार्य संबंध नहीं बताया गया है।

सारांश:

इन आयतों में जो आदेश और धार्मिक भावनाएं व्यक्त की गई हैं, वे तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं हैं और वैज्ञानिक या तार्किक दृष्टिकोण से संदिग्ध हैं। इनमें दी गई भावनाओं और विश्वासों को प्रमाणित नहीं किया जा सकता, और इनका आधार केवल धार्मिक आदेशों और व्यक्तिगत आस्थाओं पर निर्भर है।